मेरे ख़ून में है झलक तेरी, मेरी नब्ज़[1] में है चमक तेरी,
मेरा साँस तेरा सफ़ीर है !
जिन्हें प्रीत के उन्हें जीत है, यही जग में जीत की रीत है,
तेरे दिल जिगर भी हैं बेवफ़ा[2] !
हमें ग़ैरियत[3] यह मिटानी है ! हमें जीत आप यह पानी है !
कि हो भाई-भाई से आशना !
मेरी जान हो कि मेरा बदन ! तेरी जल्वागाह है ऐ वतन,
तेरी ख़ाक उनका ख़मीर है !

---

[1] नाड़ी। [2] कृतघ्न, प्रेम-रहित। [3] दुराव।

श्री ख़ुशी मुहम्मद नाज़िर

श्री ख़ुशी मुहमम्द नाज़िर रियासत जम्मू और काश्मीर के मिनिस्टर और गवर्नर रहे। रिटायर होकर वे चक झुरा, ज़िला लायलपुर, में आ गए। वहीं से उनकी कविताओं, क़सीदों और सेहरों का पहला संग्रह "नग़मए फिरदौस" के नाम से प्रकाशित हुआ।

वे न अपने सेहरों के लिये प्रसिद्ध हैं न क़सीदों और अन्य नज़्मों के लिये। उन्हें ख्याति उनकी कविता "जोगी" के कारण मिली। "जोगी" का आरंभ जैसा कि पाठक देखेंगे (अपनी अन्य कविताओं की भाँति) उन्होंने क्लिष्ट उर्दू में किया पर न जाने क्यों, कदाचित इसलिए कि उन्होंने एक हिंदू जोगी को अपनी कविता का विषय बनाया अथवा इसलिए कि उसमें जिन भावनाओं को व्यक्त किया वे हिंदू दर्शन से मिल जाती थीं, अथवा उनके मित्र हिंदू थे, दूसरे ही बंद से (जैसा कि पाठक देखेंगे) उनकी भाषा सरल हो गई और फिर तो वे इस भाषा के प्रवाह में बह गए।

श्री नाज़िर हिन्दू मुस्लिम दंगों से बड़े दुखी थे। उनकी इस व्यथा का प्रतिबिम्ब जोगी में है। देश में बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता की बीमारी को देखकर उन्होंने वर्षों पहले लिखा था—

काश शैख़ो बरहमन मिल कर करें कुछ रोक थाम,
वरना भारत पर कोई भारी अज़ाब आने का है!

उनकी यह भविष्यवाणी कितनी सच्ची साबित हुई!

जोगी

(भाग एक)

कल सुब्ह के मतलाए तावां से, जब आलम बुक़्क़ाए नूर हुआ,
सब चाँद सितारे माँद हुए, खुरशीद का नूर ज़हूर हुआ !
मस्ताना हवाए गुलशन थी, जानाना अदाए गुलबन थी,
हर वादी वादिए ऐमन थी, हर कूचे पै जल्वए नूर हुआ !
जब बादेसबा मिज़राब बनी, हर शाखे निहाल रुबाब बनी,
शमशादो चनार रूबाब हुए, हर सरवो समन तम्बूर हुआ !
सब तायर मिल कर गाने लगे, मस्ताना वह तान उड़ाने लगे,
अशजार भी वज्द में आने लगे, गुलज़ार भी बज़्मे सरूर हुआ !
सब्ज़े ने बिसात बिछाई थी, और बज़्मे निशात सजाई थी,
बन में, गुलशन में आँगन में, फ़र्शे सिंज़ाबो समूर हुआ !

था दिलकश मंज़रे-बाग़ो जहाँ और चाल सबा की मस्ताना,
इस हाल में एक पहाड़ी पर जा निकला नाज़िर दीवाना !

चीलों ने झंडे गाड़े थे, परबत पर छावनी छाई थी,
ये ख़ेमें डेरे बादल के, कुहरे ने क़नात लगाई थी !
यां बर्फ़ के तोदे गलते थे, चाँदी के फ़व्वारे चलते थे,
चश्मे सीमाब उगलते थे, नालों ने धूम मचाई थी !
इक मस्त क़लन्दर जोगी ने, परबत पर डेरा डाला था,
थी राख जटा में जोगी की, औ' अंग भभूत रमाई थी !
था राख का जोगी का बिस्तर, औ, राख का पैराहन तन पर,
थी एक लँगोटी ज़ेबे कमर, जो घुटनों तक लटकाई थी !
सब खल्क़ो ख़ुदा से बेगाना, वह मस्त क़लन्दर दीवाना,
बैठा था जोगी मस्ताना, आँखों में मस्ती छाई थी !

जोगी से आँखें चार हुईं और झुक कर हमने सलाम किया,
तीखे चितवन से जोगी ने तब नाज़िर से यह कलाम किया!

क्यों बाबा नाहक़ जोगी को, तुम किस लिये आके सताते हो,
हैं पंख पखेरू बनबासी, तुम जाल में इन को फँसाते हो!
कोई झगड़ा दाल चपाती का, कोई दावा घोड़े हाथी का,
कोई शिकवा संगी साथी का, तुम हमको सुनाने आये हो!
हम हिरसो हवा को छोड़ चुके, इस नगरी से मुँह मोड़ चुके,
हम जो ज़ंजीरें तोड़ चुके, तुम लाके वही पहनाते हो!
तुम पूजा करते हो धन की, हम सेवा करते साजन की,
हम जोत जगाते हैं मन की, तुम उसको आके बुझाते हो!
संसार से यां मुख फेरा है, मन में साजन का डेरा है,
यां आँख लड़ी हैं प्रीतम से, तुम किस से आँख मिलाते हो!

यूं डांट डपट कर जोगी ने अब हम से यह इरशाद किया,
सिर उसके झुका कर चरणों पर जोगी को हमने जवाब दिया!

हैं हम परदेसी सैलानी, यूं आँख न हम से चुरा जोगी,
हम आये हैं तेरे दर्शन को, चितवन पर मैल न ला जोगी!
आबादी से मुँह फेरा क्यों, जंगल में किया है डेरा क्यों,
हर महफ़िल में, हर मंज़िल में, हर दिल में है नूरे खुदा जोगी!
क्या मस्जिद में क्या मन्दिर में, सब जल्वा है वजुहुल्लाह[1] का,
परबत में नगर में सागर में, हर[2] उतरा है हर जा जोगी!
जी नगर में ख़ून बहलता है, वां हुस्न पै इश्क़ मचलता है,
वां प्रेम का सागर चलता है, चल दिल की प्यास बुझा जोगी!
वां दिल का ग़ुँचा खिलता है, गलियों में मोहन मिलता है,

---

[1] ईश्वर के मुखमण्डल का। [2]ईश्वर।

चल शहर में संख बजा जोगी, बाज़ार में धूनी रमा जोगी !
फिर जोगी जी बेदार हुए इस छेड़ ने इतना काम किया,
फिर इश्क़ के उस मतवाले ने यह वहदत का इक जाम दिया !
इन चिकिनी चुपुड़ी बातों से, मत जोगी को फुसला बाबा,
जो आग बुझाई जतनों से, फिर इस पै न तेल गिरा बाबा !
है शहरों में ग़ुल-शोर बहुत, और काम क्रोध का ज़ोर बहुत,
बसते हैं नगर में चोर बहुत, साधों की है बन में जा बाबा !
हैं शहर में शोरिशे-नफ़सानी, जंगल में हैं जल्वए रूहानी,
है नगरी डगरी कसरत की, बन वहदत का दरिया बाबा।
हम जंगल के फल खाते हैं, चश्मों से प्यास बुझाते हैं,
राजा के न द्वारे जाते हैं, परजा की नहीं परवा बाबा !
सिर पर आकाश का मंडल है, धरती पे सुहानी मख़मल है,
दिन को सूरज की महफ़िल है, शब को तारों की सभा बाबा !
जब झूम के याँ घन आते हैं, मस्ती का रंग जमाते हैं,
चश्मे तंबूर बजाते हैं, गाती है मलार हवा बाबा !
जब पंछी मिल कर गाते हैं, पीतम के संदेस सुनाते हैं,
सब के बरिद्द झुक जाते हैं, थम जाते हैं दरिया बाबा !
है हिरसो हवा का ध्यान तुम्हें, औ' याद नहीं भगवान तुम्हें,
सिल पत्थर-ईंट-मकान तुम्हें, देते हैं यह राह भुला बाबा !
परमात्मा की वह चाह नहीं, और रूह को दिल में राह नहीं,
हर बात में अपने मतलब के, तुम घड़ लेते हो खुदा बाबा !
तन मन को धन में लगाते हो, हर नाम को दिल से भुलाते हो,
माटी में लाल गँवाते हो, तुम बन्दए हिरसो हवा बाबा !
धन दौलत आनी जानी है यह दुनिया राम कहानी है,
यह आलम आलमे फ़ानी है बाक़ी है ज़ाते खुदा बाबा !

(भाग दो)

जब से मस्ताने जोगी का, मशहूरे जहां अफ़साना हुआ,
उस रोज़ से बन्दए-नाज़िर भी, फिर बज़्म में नग़मा सरा न हुआ।
कभी मंसवो जाह की चाट रही, कभी पेट की पूजापाट रही,
लेकिन यह दिल का कँवल न खिला, और ग़ुंच-ए-ख़ातिर वा न हुआ।
कहीं लाग रही, कहीं प्रीत रही, कभी हार रही, कभी जीत रही,
इस कलियुग की यही रीत रही, कोई बंद से ग़म की रिहा न हुआ।
यूँ तीस बरस जब तीर हुए, हम कारे जहाँ से सैर हुए,
था अहदे-शबाब सराबे-नज़र, वह चश्म-ए-आबे बक़ा न हुआ।
फिर शहर से जी उकताने लगा फिर शोक़ महार उठाने लगा,
फिर जोगी जी के दर्शन को नाज़िर इक रोज़ रवाना हुआ।

× ×

कुछ रोज़ में नाज़िर जा पहुँचा, फिर होशरुबा नज़्ज़ारों में,
पंजाब के गर्द ग़ुबारों से, कश्मीर के बाग़ बहारों में।
फिर बनवासी बैरागी का, हर सिम्त सुराग़ लगाने लगा,
बनिहाल के भयानक ग़ारों में, पंजाल की काली धारों में।
अपना तो ज़माना बीत गया, सरकारों में दरबारों में,
पर जोगी, मेरा शेर रहा, परबत की सूनी ग़ारों में।
वह दिन को टहलता फिरता था, इन क़ुदरत के गुलज़ारों में,
और रात को महवे-तमाशा था, अम्बर के चमकते तारों में।
बरफ़ाब का था इक ताल यहां, या चाँदी का था थाल यहां,
अलमास जड़ा था ज़मुर्रद में, यह ताल न था कोहसारों में।

तालाब के एक किनारे पर, यह बन का राजा बैठा था,
थी फ़ौज खड़ी दीवारों की, हर सिम्त बुलन्द हसारों में।
यां सब्ज़ाओ-गुल का नज़ारा था, और मंज़र प्यारा-प्यारा था,
फूलों का तख़्त उतारा था, परियों ने इन कोहसारों में।
यां बादे सहर जब आती थी, भैरों का ठाठ जमाती थी,
तालाब रुबाब बजाता था, लहरों के तड़पते तारों में।
जब जोगी जोशे-वहदत में, हर-नाम की ज़र्ब लगाता था,
इक गूँज सी चक्कर खाती थी, कोहसारों की दीवारों में।
इस इश्क़ो-हवा की मस्ती से, जब जोगी कुछ हुश्यार हुआ,
इस ख़ाकनशीं की ख़िदमत में, यूं नाज़िर अर्ज़ गुज़ार हुआ।
कल रश्के-चमन थी ख़ाके वतन है आज वह दश्ते बला जोगी,
वह रिश्ताए उल्फ़त टूट गया कोई तस्मा लगा न रहा जोगी।
बर्बाद बहुत से घराने हुए, आबाद हैं बन्दी ख़ाने हुए,
नगरों में है शोर बपा जोगी, गाँवों में है आहोबुका जोगी।
वह जोशे-जुनू के ज़ोर हुए, इंसान भी डंगर ढोर हुए,
बच्चों का है क़त्ल रवा जोगी, बूढ़ों का है ख़ून हवा जोगी।
यह मस्जिद में और मन्दिर में, हर रोज़ तनाज़ा कैसा है;
परमेश्वर है जो हिन्दू का, वही मुस्लिम का है ख़ुदा जोगी।
काशी का वह चाहने वाला है, यह मक्के का मतवाला है,
छाती से तो भारत माता की, दोनों ने है दूध पिया जोगी।
है देश में ऐसी फूट पड़ी, इक क़हर की बिजली टूट पड़ी,
रूठे मित्रों को मना जोगी, बिछड़े बीरों को मिला जोगी।
कोई गिरता हो, कोई चलता हो, गिरते को कोई कुचलता हो,
सबको इक चाल चला जोगी, औ' एक डगर पर ला जोगी।

वह मैकदा ही बाक़ी न रहा, वह ख़ुश न रहा, साक़ी न रहा,
फिर इश्क़ का जाम मिला जोगी, यह लाग की आग बुझा जोगी।
परबत के न खाली रूखों को, यह प्रेम के गीत सुना जोगी,
यह मस्त तराना वहदत का, चल देस की धुन में गा जोगी।
भक्तों के क़दम जब आते हैं, कलजुग के क्लेश मिटाते हैं,
थम जाता है सैले-बला जोगी, रूक जाता है तीरे क़ज़ा जोगी।

नाज़िर ने जो यह अफ़सानाए ग़म रूदादे वतन का याद किया,
जोगी ने ठंडी साँस भरी औ' नाज़िर से इरशाद किया।

बाबा हम जोगी बनबासी, जंगल के रहने वाले हैं,
इस बन में डेरे डाले हैं, जब तक ये बन हरियाले हैं।
इस काम क्रोध के धारे से, हम नाव बचाकर चलते हैं,
जाते या मुँह में मगरमच्छ के, दरिया के नहाने वाले हैं।
है देश में शोर पुकार बहुत, और झूठ का है परचार बहुत,
वां राह दिखाने वाले भी, बेराह चलाने वाले हैं।
कुछ लालच लोभ के बंदे हैं, कुछ मकर फ़रेब के फंदे हैं,
मूरख को फँसाने वाले हैं, ये सब मकड़ी के जाले हैं।
जो देश में आग लगाते हैं, फिर उस पर तेल गिराते हैं,
ये सब दोज़ख का ईंधन हैं, औ' नरक के सब यह नवाले हैं।
भारत के प्यारे पूतों का, जो ख़ून बहाने वाले हैं,
कल छायों में जिसकी बैठेंगे, वही पेड़ गिराने वाले हैं।
जो ख़ून ख़राबा करते हैं, आपस में कटकट मरते हैं,
यह वीर बहादुर भारत को, ग़ैरों से छुड़ाने वाले हैं।
जो धर्म की जड़ को खोदेंगे, भारत की नाव डुबो देंगे,
यह देस को डसने वाले हैं, जो साँप बग़ल में पाले हैं।

जो जीव की रक्षा करते हैं, औ' ख़ौफ़े ख़ुदा से डरते हैं,
भगवान को माने वाले हैं, ईश्वर को रिझाने वाले हैं।
दुनिया का है सिरजनहार वही, माँबूद वही मुख़्तार वही,
यह काबा, कलीसा, बुतख़ाना, सब डौल उसी के डाले हैं।
वह सब का पालनहारा है, यह कुनबा उसी का सारा है,
ये पीले हैं या काले हैं, सब प्यार से उसने पाले हैं।
कोई हिन्दी हो कि हजाज़ी हो, कोई तुर्की हो कोई ताज़ी हो,
जब छीर पिया इक माता का, सब एक घराने वाले हैं।
सब एक ही गत पर नाचेंगे, सब एकही राग अलापेंगे,
कल श्याम कन्हैया फिर बन में, मुरली को बजाने वाले हैं।
आकाश के नीले गुंबद में, यह गूँज सुनाई देती है,
अपनों को मिटाने वालों को, कल ग़ैर मिटाने वाले है।
यह प्रेम सँदेसा जोगीं का, पहुँचा दो उन महापुरुषों को,
सौदे में जो भारतमाता के, तन मन के लगाने वाले हैं।
परमात्मा के वह प्यारे हैं, और देस के चाँद सितारे है,
अंधेर नगर में वहदत की, जो जोत जगाने वाले हैं।

नाज़िर तुम भी यहीं आ बैठो और बन में धूनी रमा बैठो!
शहरों में गुरू फिर चेलों को कोई नाच नचाने वाले हैं।

सैयद मुतलवी फ़रीदाबादी

सैयद मुतलवी फ़रीदाबादी के सम्बन्ध में उर्दू के प्रसिद्ध गल्प-कार श्री राजिन्दर सिंह वेदी ने उनके संग्रह "हैय्या, हैय्या" की भूमिका में लिखा है कि वे कदाचित् उर्दू में पहले कवि हैं जिन्होंने जनता की 'आसों' और 'प्यासों' का इतने निकट से अनुभव किया है और उन्हें अपने गीतों के कलेवर में ढाला है।

जोश मलीहाबादी की भाँति मुतलवी के यहाँ भी हमारे देश के राजनीतिक जीवन का हर पेचोख़म नज़र आजाएगा। अंतर केवल यह है कि जहाँ जोश की आम भाषा अत्यन्त क्लिष्ट होती है वहाँ मुलतवी की बड़ी सरल और फिर निचले तबके से जोश की हमदर्दी बौद्धिक है लेकिन मुतलवी वास्तविक !

नाव खेने वाले मज़दूरों का गीत

ओ ओ ओ ओ
हो हो हो हो
लो लो लो लो
ढो ढो ढो ढो
चलो चलो चलो चलो
बढ़ो बढ़ो बढ़ो बढ़ो
चलो बढ़ो चलो बढ़ो चलो बढ़ो चलो बढ़ो

नाव में बैठी राजा की नार, पातर नाचें बारम्बार।
पायल देत रही झंकार, ढोलक बोले गिड़गिड़ तार।
ताली बाजें, बाजे तार, गूँज रही नदिया, संसार।
राह्मी के नाओ-खेवनहार, धूप में म्हारी नाओ मँझधार।

चलो चलो बढ़ो बढ़ो

पेट की आग से नाव चले, चलो चले चलो चले।
रस्सी के विस्सों से छाती जले, कितनी जले चलो चले।
मंज़िल पारेंगे दीवे बले, दीवे बले दी वे बले।
कष्टी बुरे, अकष्टी भले, हमी बुरे वही भले।

चलो चलो बढ़ो बढ़ो

सो गई नाव में कामिनि नार, नौकर चाकर भये तैयार।
भादों की घाम जले संसार, हीरों की धरती बनी अंगार।
चाबुक दोनों रहे फटकार, आगे टंडियल पीछे जमादार।
रोको तो होवे परामार, रौली करें हैं, होई उदार।

चलो चलो बढ़ो बढ़ो

मज़दूरी करके पछताए, पछताए फिर करने आये।
छाती कटाई पैर जलाये, रात हुई लई मेंहदी लगाए।
दिन निकले फिर करने आए, दो दो आने सबने पाए।
दिन दिन पेट की आग जलाए, इस अगनी को कोन बुझाए।

चलो चलो बढ़ो बढ़ो

कोई नाव पड़े सुख पाएँ, कोई रात दिना दुखियाएँ।
मनमानी कोई अपनी दिखाएँ, कोई माँग कर दिल बहलाएँ।

कोई पहन पहन मर जाएँ, कोई मरे पर कफ़न न पाएँ।
इस दुनिया को आग लगाएँ, बल्ली तोड़ें बेड़ा डुबाएँ।

चलो चलो बढ़ो बढ़ो

चलो..................चलो.........ब...ढ़ो...............बढ़ो।
चलो............लो.........लो........बढ़ो.........ढ़ो.....ढ़ो।
लो.......लो........लो.....लो.........हो.........हो..... हो।
ओ..........ओ..........ओ............ओ.............ओ।
ओ...............ओ.................ओ..................ओ।

ओ.........ओ

ओ!

सावन पिया बिन

सावनवा पिया बिन कित आवे चैन, कित आवे चैन चित्त कित पावे चैन
सावनवा पिया बिन कित आवे चैन!

मेहा बरसे झालें लेवे बरस बरस मोहे दुख देवे!
रूखों में अँबिया झूले लेवे कोयल कूके सुन मेरे बैन!

किस बिध आवे चैन!

सावनवा पिया बिन कित आवे चैन, कित आवे चैन चित्त कित पावे चैन
सावनवा पिया बिन कित आवे चैन!

पुकार पपीहे की गोली सी लागै पी पी कहकर मोसे भागे।
मोरनियां लिये पीछे आगे नाचे मोर चलावे सैन।

लगे सब दुख दैन !

सावनवा पिया बिन कित आवे चैन, कित आवे चैन चित्त कित पावे चैन।

सावनवा पिया बिन कित आवे चैन !

यह सैना है जग से न्यारी जिसके सिपाही नर औ नारी !
जेलके पंछी देश. पुजारी देश के दुख से सब बेचैन !

उनके न्यारे दिन औ रैन !

सावनवा पिया कित आवें चैन, कित आवे चैन चित्त कित पावे चैन !

सावनवा पिया बिन कित आवे चैन !

क्या वां भी सजन हैं देश की बातें वैसे ही दिन औ वैसी ही रातें,
वैसी ही धुन में कटत बरसातें क्या वां भी पी जागो दिन रैन !

क्या वां भी नहीं है साजन चैन,

सावनवा पिया कित आवे चैन, कित आवे चैन चित कित पावे चैन !

सावनवा पिया बिन कित आवे चैन !

धरती मां छाती से लगाले

पच्छम उमड़े बादल काले पूरब फैले धुएँ के गाले !
पटम हुए सब आँखो वाले कौन भला इस काल को टाले !
खांडे बाजें चमकें भाले नाग खड़े हैं जीभ निकाले !
तोपें खोल रही धम्माले तड़ तड़ तड़ तड़ गोली चाले !
बहने लागे खून के नाले कट कट गिरते गोरे काले !
सभी किसान हैं सभी ग्वाले सब मजदूरी करने वाले !

आ ऊपर से कौन सम्हाले

तेरे ही बच्चे तेरे ही बाले
धरती मां छाती से लगा ले !

मेहनत में ये जुटने वाले रात दिना ये लुटने वाले !
दीन धर्म पर मिटने वाले जेलों में ये पिटने वाले !
शेरों जैसे डटने वाले अड़ कर फिर ना हटने वाले !
सूत बानाये बटने वाले, नाम ख़ुदा के रटने वाले !

इन मरतों को कौन बचाले
तेरे ही बच्चे तेरे ही बाले
धरती मां छाती से लगाले !

दोनों ओर किसानों के दल हैं मज़दूरों के किसानों के दल हैं !
भूखों और बदहालों के दल हैं मूरख औ' अनजानों के दल हैं !
छाए उन पर चालों के दल हैं गोरों पीलों कालों के दल हैं !
धन और दौलत वालों के दल हैं लच्छमी और मतवालों के दल हैं !
महजिद गिरजा शिवालों के दल हैं सब धोखों में किसानों के दल हैं,

इन धोखों से कौन निकाले
तेरे ही बच्चे तेरे ही बाले
धरती मां छाती से लगाले !

पंछी से

कब तक बोलेगा मीठे बोल समय है मूरख आज अमोल !
उठ औ' पिंजरे के पट खोल !
घघ्घट करत अँध्यारी रात बम बरसत हैं सारी रात !
तू भी अपना शंख टटोल !

खोल के बाहर आजा पंछी पंख पवन में फैला पंछी !
पिंजरे में रह कर पंख न तोल !

जेल चला है देस-सिपाही

जेल चला है देस-सिपाही रानी तुझको छोड़ !

तेरी याद नहीं भूलेगी मन की बगिया में तू फूलेगी !
ठंडे सांस यहां तू लेगी दिल की कली वां ना फूलेगी !

पलक उठा मत दिल को तोड़,
मत दुगदा में मुँह को मोड़,

चला है तुझको छोड़ !
जेल चला है देस-सिपाही रानी मुझको छोड़ !

फिर अच्छे दिन आएँगे रानी बिछड़े फिर मिल जाएंगे रानी !
देश के बासी गाएंगे रानी झंडों को लहराएंगे रानी !

दो ही दिन की बात है प्यारी,पल्ला मेरा छोड़ !
मत दुगदा में मुँह को मोड़ ,

चला है तुझको छोड़ !
जेल चला है देस-सिपाही, रानी तुझको छोड़ !

सुबह के सितारे से

उमड़ते रहें तेरी किरणों के धारे यूँ ही जगमगाते रहें ये सितारे।
तेरे गो बहुत दिलरुबा हैं नज़ारे सुलाखों से ना झांक हमको प्यारे।

चमक, हां चमक सुबह के ओ सितारे !
हमेशा चमक सुबह के ओ सितारे !

हमें देखने में मज़ा क्या धरा है, मज़ा जेल में क्या जो आफ़त भरा है।
उन्हीं क़ैदियों का यह आफ़तकदा है, लगाते हैं जो शाम को गाके नारे।

लगाते हैं नारे वतन के दुलारे!
हमेशा चमक सुबह के ओ सितारे!

तुझे देख याद आगई इक हसीं की, खिली चाँदनी सी किसी नाज़नीं की।
कहीं तू न बिंदी हो उसकी जबीं की, जिसे मैंने पाया था जमुना किनारे।

किनारे जो हैं दिल में सरसब्ज़ सारे!
हमेशा चमक ओ सुबह के सितारे!

मगर बेमज़ा हैं ये रंगीन यादें, नहीं महर में दिल वे ग़मगीन यादें।
न अब दे सकेंगी वे तस्कीन यादें, फ़रायज के कुछ और ही हैं इशारे।

इशारे कि आकाश के तोड़ो तारे!
हमेशा चमक ओ सुबह के सितारे!

वही साज भी जिसके बासी हैं हमदम, उठाए मुसावाते आलम के परचम,
ज़रा देख इन शेरमरदों के दमखम, नघबरा किए जा तू इनके नज़ारे।

ग़रीबों के होने को है वारे न्यारे!
हमेशा चमक ओ सुबह के सितारे!

बंदी पंछी

कब यह खुलेगी काली खिड़की, कब पछी उड़ जाएंगे,
ऐसा मौसम कब आएगा उड़ उड़ कर जब गाएंगे!
इस पिंजरे की हर तीली सपने में आन जलाती है,
ध्यान से कब यह निकलेगी कब इससे रिहाई पाएंगे!

बरस रहे हैं आज तो हम पर ओले भी औ' पत्थर भी,
छितिज में हैं कुछ छितरे बादल उमड़ के वे भी आयेंगे !
आयेंगे औ' छा जायेंगे आकाश के कोने कोने में,
पवन चलेगी ऐसी पंछी सब पिंजरे खुल जाएंगे !

मानस-शक्ति

जब नाव भंवर में आती है और आके झकोले खाती है,
पतवार भी गिरकर ऐ साथी जब पानी में बह जाती है !
और नाव-खिवैया मल्लाह भी जब बल खाके गिर जाता है,
वह बल्ली जिस पर नाज़ां था जब खुद उसको ले जाती है !
मायूसी के काले बादल से जब ओले पड़ने लगते हैं,
और आस निरास की दुनिया में जब एक तबाही आती है !
जब सभी मुसाफिर ऐ साथी मिल-मिल के गले से रोते हैं,
इंसानी ग़ैरत उठती है और ख़ुद शक्ती बन जाती हैं !
दीवाने भूतों की तरह से लहरों से इंसां लड़ते हैं,
यह अगनी मानस-शक्ती की नैया को पार लगाती है !

डाक्टर मुहम्मद दीन 'तासीर'

जब संग्रह का पहला संस्करण छपा था, डाक्टर मुहम्मद दीन तासीर एम० ए० ओ० कालेज अमृतसर के प्रिंसिपल थे। पिछले आठ दस वर्ष में उनके जीवन ने कई रंग बदले हैं। वे विलायत गए। उन्होंने एक अंग्रेज़ महिला से विवाह किया। वे जम्मू कालेज के प्रिंसिपल हुए। वे युद्ध के दिनों में एक बड़े ऊँचे सरकारी पद पर रहे। पाकिस्तान बन जाने पर वहां जाने को विवश हुए।

डा० तासीर में एक गुण है कि वे नौकरी पर हों या बेकार, लिखते रहे हैं। अपने दूसरे समकालीनों की भाँति दफ़्तरी उलझनों में फँस कर ख़ामोश नहीं हुए। इसके अतिरिक्त आजीविका के लिए जो भी करते हैं अपनी लेखनी पर उसका प्रभाव नहीं आने देते। उनकी कविता "दोराहे पर" जो उन्होंने अपनी अफ़सरी के दिनों में लिखी, मेरे इस कथन का प्रमाण है।

जहां तक उनके गीतों अथवा गीतों से मिलती-जुलती कविताओं का सम्बन्ध है, सीधी सादी रसीली भाषा और भावों की उड़ान उनका विशेष गुण है।

कब आओगे प्रीतम प्यारे

कब आओगे प्रीतम प्यारे! कब आओगे प्रेम द्वारे!
रह गए पाओं चलते-चलते, थक गईं आखें रस्ता तकते,
कब आओगे प्रीतम प्यारे!

एक किनारे महल तुम्हारा, एक तरफ़ हम पीत के मारे,
बीच में नदिया, तुंद[1] हवाएं, कैसे आएं, कैसे जाएं?
कब आओगे प्रीतम प्यारे?

फूल खिले हैं बाग़ में हरसू[2], दुनिया में फैली है ख़ुशबू,
ऊँची ऊँची हैं दिवारें, कब तक सिर दीवार से मारें?
कब आओगे प्रीतम प्यारे?

खाना, पीना, सोना कैसा? हँसना कैसा, रोना कैसा?
चार तरफ़ छाई है उदासी, घर में रह कर हैं बनवासी!
कब आओगे प्रीतम प्यारे?

देवदासी

बाल सँवारे माँग निकाले, दुहरा तेहरा आँचल डाले,
नाक पै बिंदी कान में बाले, जगमग-जगमग करनेवाले।
माथे पै चंदन का टीका, आँख में अंजन फीका-फीका।
शबगूं[3] काली काली आँखें, मदमाती, मतवाली आँखें,
जोबन की रखवाली आँखें।

आँख झुकाये लट छिटकाये, जाने किसकी लगन लगाए!
बिरह उदासी, दर्शन-प्यासी, देवादासी[4] नदी किनारे,
प्रेम द्वारे, तन मन हारे,
यों ही अपने आप खड़ी है! बुत बनकर चुपचाप खड़ी है!

---

[1]तेज़। [2]हर ओर। [3]रात की तरह काली। [4]देवदासी।

मान भी जाओ !

मान भी जाओ, जाने भी दो, छोड़ो भी अब पिछली बातें।
ऐसे दिन आते हैं कब-कब, कब आती हैं ऐसी रातें।
मान भी जाओ जाने भी दो !

देख लो वह पूरब की जानिब, नूर ने दामन फैलाया है।
शब की ख़िलअत[1] दूर हुई है, सूरज वापस लौट आया है।
मान भी जाओ, जाने भी दो !

जल-जल कर मर जाने वाले, परवानों का ढेर लगा है।
लेकिन यह भी देखा तुमने, शमअ़ का क्या अंजाम हुआ है ?
मान भी जाओ जाने भी दो !

मान भी जाओ, तुमको क़सम है, मेरे सर की अपने सर की।
तुमको क़सम है, मेरे दुश्मन, अपने उस मंज़ूर नज़र की।
मान भी जाओ जाने भी दो !

उसकी क़सम है, जिसकी ख़ातिर, यों तुम मुझको भूल गए हो !
भूल गए हो सारे वादे क़ौलो क़सम को भूल गए हो !
मान भी जाओ जाने भी दो !

अच्छा तुम सच्चे मैं झूठा, अच्छा तुम जीते मैं हारा।
क्या दुश्मन औ' किसका दुश्मन, झूठा था यह सारा क़िस्सा।
मान भी जाओ, जाने भी दो !

कब तक उसको याद करोगे ?

मेरी वफ़ाएं याद करोगे, रोओगे फ़रयाद करोगे।
मुझको तो बर्बाद किया है, और किसे बर्बाद करोगे !

---

[1]वह पोशाक जो सम्राट् की ओर से पुरस्कार में दी जाती है—यहां केवल वस्त्र से अभिप्रायहै। दीप-शिखा।

हम भी हँसेंगे तुम पर एक दिन, तुम भी कभी फ़रयाद करोगे ।
महफ़िल की महफ़िल है ग़मगीं, किस किस का दिल शाद[1] करोगे ।
दुश्मन तक को भूल गए हो, मुझको तुम क्या याद करोगे ?
खत्म हुई दुश्नाम तराज़ी[2], या कुछ और इरशाद[3] करोगे ?
जाकर भी नाशाद किया था, आकर भी नाशाद करोगे ?
छोड़ो भी 'तासीर' की बातें, कब तक उसको याद करोगे ?

एकांत की आकांक्षा

मुझको तन्हा[4] रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो ।
खुश रहता हूँ अच्छा हूँ मैं, दुख सहता हूँ सहने दो !
मुझको तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
मेरे दिल की आग बुझा दी, आहें भरने वालों ने ।
मेरी ठंढक खो दी है, इन उलफ़त करने वालों ने ।
मुझको तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
मुझको मुझसे छीन लिया है, मेरे अपने प्यारों ने ।
टुकड़े-टुकड़े कर डाला है, प्रेम भरी तलवारों ने ।
मुझको तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
ढाँप लिया है मेरा तन मन, नाज़ुक नाज़ुक[5] पर्दों में ।
छोड़ दो मुझको, दम घुटता है मेरा तुम हमदर्दों में ।
मुझको तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
क़ैद किया है तुमने मुझको उलफ़त के बुतख़ाने में ।
महूव[6] हुआ जाता हूँ मैं अब आप अपने अफ़साने में ।
मुझको तन्हा रहने दो तुम अपने हाल में रहने दो !

---

[1]प्रसन्न । [2]गाली निकालना । [3]कहना (फ़रमाना) [4]एकाकी । [5]कोमल-कोमल । [6]मग्न ।

चार तरफ़ से घेर लिया, मैं तुम में खोया जाता हूँ।
अब मैं अपनी आँखों से भी ओझल होता जाता हूँ।
मुझको तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो!
मेरी इक तस्वीर खयाली[1] तुमने आप बना ली है।
मुझको तुम से प्यार नहीं है, अपनी मूरत प्यारी है।
मुझको तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो!

---

[1] काल्पनिक।

मक़बूल हुसैन अहमदपुरी

श्री मक़बूल हुसैन भक्ति-रस के कवि हैं। उन के हृदय में निरंतर एक स्निग्ध प्रेम, एक अपार भक्ति की नदी हिलोरें लेती रहती है। उर्दू के इस युग में यदि हम उन्हें 'भक्ति काल का कवि' कह दें तो बेजा नहीं। वही मिठास, वही श्रद्धा, तअस्सुब से बहुत दूर मिलाप की वही भावना—उन का गीत भक्ति-रस का एक निरंतर बहने वाल सोता है। इस के साथ ही प्रकृति का चित्रण करने में और देहात की सादा भावनाओं को ज़बान देने में भी श्री मक़बूल की क़लम ने गीतों के मोती बखेरे हैं। हिंदी के आप जितने समीप हैं उतने कम दूसरे उर्दू कवि हैं। आप की भाषा पर खड़ी बोली की अपेक्षा ब्रजभाषा और स्थानीय भाषा का अधिक प्रभाव है।

देश-विभाजन पर होने वाले हत्याकांड पर बहुतेरे कवियों ने लिखा है। 'मक़बूल' की रूह भी चुप नहीं रह सकी। उन्होंने किसी को बुरा-भला नहीं कहा, बस एक छोटा-सा गीत लिखा है जिसमें इस बबरता को देख कर कवि की विवशता को प्रकट किया है।

पहले पहल

पहले-पहल जब आँखों आँखों, तुमने अपना दरस दिया था,
कैसे कोई बतावे स्वामी, मन को तुमने मोह लिया था।
नई मुसीबत डाली तुमने, हँस कर आँख छिपा ली तुमने।
कोई जिए या मरे तुम्हें क्या! अपनी बात बना ली तुमने!

पहले-पहल जब बात बात में जादू अपना तुमने किया था,
कैसे कहूं तुमसे मैं स्वामी अपनी सुध-बुध भूल चुका था।
नोखी[1] दशा बनाई तुमने अपनी धज सिखलाई तुमने।
यह जी मिटे जले या झुलसे अब तो आग लगाई तुमने।

पहले-पहल जब इन आँखों से मेंह का धारा फूट बहा था;
प्रेम का सागर मेरे स्वामी, ख़ूब भरा था ख़ूब भरा था।
सुख की नदी बहाई तुमने, जीवन नाव चलाई तुमने।
यह अहसान भला क्यों भूलूं? कश्ती पार लगाई तुमने!

पहले पहल जब तुमने स्वामी सिर पर मेरे हाथ रखा था,
सुन लो, सुन लो भाग हमारा सोते-सोते जाग उठा था।
अपने पाँव गिराया तुमने मुक्त किया अपनाया तुमने।
अब क्या चाहूँ सब कुछ पाया, ईश्वर रूप दिखाया तुमने[2]!

पूरम पार भरी है गंगा

पूरम पार भरी है गंगा, खेवनहारे हौले-हौले!

मेघ प्रेम का छाया मन में, प्रियतम बोल, पपीहा बोले।
वर्षा रुत औ' रात अँधेरी, नाव प्रेम की खाय झकोले।

सँभल सँभल रे प्रेम के जोगी, मन की गाँठ न कोई खोले।
देख देख अनमोल समय है, अपने मन ही मन में रोले।

---

[1]अनोखी। [2]अब तक हिंदी के जिस रूप ने उर्दू पर प्रभाव डाला है वह अधिकतर व्रज-भाषा है। आधुनिकतम हिंदी कविता को समझनेवाले हिंदी में बहुत कम मिलते हैं, फिर उर्दू की बात तो दूसरी है। मक़बूल साहब ने आवश्यकतानुसार हिंदी से मिलते-जुलते व्रज-भाषा की तर्ज़ के शब्द बना भी लिये हैं।

नींद प्रेम की सबसे न्यारी, दुख सह ले फिर जी भर सो ले।
रीत यही है इस नगरी की, पहले मन की माया खोले।

पपीहा और प्रेमी

जी बेकल, सीने में धड़कन, उलझे सिर के केस!
पता नहीं शीशे में दिल के लगी किधर से ठेस!
सुन रे पपीहे, प्रेम के पागल, प्रेमी का संदेस!

आप ही आप यह जी घबरावे, कहीं न आना-जाना,
अपने को भी भूल गए हम, जब से उन्हें पहचाना!
हां रे पपीहे, प्रेम के पागल, गा दे प्रेम का गाना!

फूल खिले फव्वारे छूटे, रंग-बिरंगी क्यारी,
फिरती है आँखों में जैसे किसी की सूरत प्यारी।
सँभल पपीहे, प्रेम के पागल, अब है तेरी बारी!

जब से दिल की दुनिया सूनी, सूना सारा देस,
खबर नहीं क्यों दिल ने आख़िर लिया बेराग का भेस?
सुन रे पपीहे, प्रेम के पागल, प्रेमी का संदेस!

मोहनी

देख मनोहर मुख मतवाला, भूला सब जादू बंगाला।
झुके नैन औ' लंबी पलकें, नेह की किरनें पलकों झलकें,
कान बचन को वाके तरसे, बातों बातों अमृत बरसे!
दाएं हाथ में थाल दया की, बाएं हाथ में धर्म की पोथी,
अगला पाँव बढ़े सेवा को, पिछला पाँव उठे पूजा को—
बिन सोए कोई सपना देखे, सीने से डर खींच के फेंके।
जग की शोभा उस का जीवन, औ' यह जीवन उस के कारन,

पाथर तज कोई वाको पूजे, नहीं नहीं ब्रह्मा को पूजे!
ब्रह्मा की सुंदरता है वह, नहीं मोहनी, ब्रह्मा है वह!

कवि

रात अँधेरी शाम साँवली; कव्वा देखो दूर से आता
पंख जोड़ कर इमली ऊपर भरे गले से है चिल्लाता
क्या जाने तब कौन मगन हो इस मेरे दिल में है गाता?

रात चाँदनी, शाम सुनहरी, चाँद आए औ' सूरज जाए,
नदी किनारे घाट के ऊपर, दूर बाँसुरी कोई बजाए,
क्या जाने तब रूठे मन को मिन्नत करके कौन मनाए?

रात अंधेरी औ' सन्नाटा, सन-सन चले हवा दक्खिन की,
पिछले पहर जब झील-किनारे इक दम छेड़े राग तलहरी,
क्या जाने तब मेरे दिल में रह-रह लेवे कौन फरहरी?

रात चाँदनी और सवेरा, पानी दरिया का मुसकाता,
कोमल कलियाँ खोल के आँखें देखें ऊषा का रथ आता,
क्या जाने तब मेरे दिल में कौन मगन होकर है गाता?

पथिक से

मन की आँखें खोल, मुसाफ़िर, मन की आँखें खोल!
मन में बसे हैं दोनों आलम[1], देख न यह आलम हो बरहम[2],
यहाँ कभी है ऐश कभी ग़म, हँसता रह औ' रो भी कम-कम,
ऐश औ' ग़म की उठा तराजू, अक़्ल की पूँजी तोल,
मुसाफ़िर, मन की आँखें खोल!

---

[1]जगत। [2]उलट न जाए। [3]आंसुओं।

दिन गुज़रा औ' निकले तारे, बजी बाँसुरी नदी किनारे,
फूट बहे अश्कों[१] के धारे, दहक उठे दिल के अंगारे,
सँभल-सँभल औ' दिल को बचा ले, मन न हो डाँवाडोल;

मुसाफ़िर, मन की आँखें खोल !

चीख़ रहे हैं लोग जहाँ के, खुल गए रस्ते यहां-वहां के,
गए वे दिन अब आहो-फ़ुग़ांके[२], उठ गए पर्दे कोनों-मकां के[३]
तू भी दिखा जीने के लच्छन, अब तो मुँह से बोल !

मुसाफ़िर, मन की आँखें खोल !

देश विभाजन पर होने वाली बर्बरता को देख कर

वह गीत कहां से लाऊं !
जो भावनाओं की हल चल से !
तड़पाए और रुलाए,
रूठों को फिर से मनाए !
क्या अनबन थी समझाए,
वह गीत कहां से लाऊं !

वह गीत हो कैसे मुमकिन !
जो सख़्त दिलों को नर्माए,
फ़रहाद का तेशा बन जाए !
परबत से नहर बहाए,
जो बर्फ़ का तोदा है उनको !
गर्माए और घुलाए,
वह गीत कहां से लाऊं !

[१]निःश्वास और नाले। [२]संसार।

नसीहत

सुख की सुंदर सेज पै तुम ने सीखा मस्त पड़े रह जाना,
खाना, सोना, हँसना, गाना, चैन मनाना, जी बहलाना,
चाल चली दुनिया अलबेली, कोसों आगे बढ़ा ज़माना!

बुरा समय आराम में भूले सुस्ती में सीखा घबराना,
ग़ैरत[1] खोई, लाज गँवाई, रास न आया पलक लगाना,
चाल चली दुनिया अलबेली कोसों आगे बढ़ा ज़माना!

कब तक आख़िर लगा रहेगा, यों अपनी औक़ात[2] गंवाना?
दिन भर फिरना शाम को आना, खाना, पीना औ' सो जाना?
चाल चली दुनिया अलबेली कोसों आगे बढ़ा ज़माया!

जहां ज़रा सी ज़िद पर जाकर, हो यों घर में आग लगाना,
ऐसे देस में ऐ 'मक़बूल' भला जीते जी है मर माना!
चाल चली दुनिया अलबेली, कोसों आगे बढ़ा ज़माना!

कोयल

सुंदर समय सुहाने दिन, आए वही पुराने दिन,
बोली कोयल 'कू-हू-कू'!
'कू-हू', 'कू-हू' की मुरली, बन बस्ती में बाज रही।
कोयल, कोयल, सुन तो सही, ऐसी क्यों बेचैन हुई?
कौन समाया है मन में? ढूँढ़ रही किस को बन में?
क्यों तू ने यह सोग किया? किस की ख़ातिर जोग लिया?

---

[1]लज्जा। [2]हस्ती।

'कू-हू' 'कू-हू', 'कू-हू-कू',

ऐ पागल, बेली कोयल, जीवन क्या जो आए कल ?

तू सब कुछ, फिर भी नादान, जा अपना जीवन पहचान !

'कू-हू', कू-हू, कू-हू कू' !

'वक़ार' अंबालवी

'वक़ार' साहिब अब न गीत लिखते हैं, न नज़्में। उन्हें पत्रकारिता निगल गई। अपनी आश्चर्यजनक प्रतिभा को उन्होंने हंगामी नज़्में और वर्ष में ३६५ अग्रलेख लिखने में ख़त्म कर दिया। परन्तु एक ज़माना था जब उनके गीत और नज़्में बड़ी लोकप्रिय थीं। संतोष इतना है कि उनके अधिकांश गीतों को कोलम्बिया रिकार्ड कम्पनी ने रिकार्डों में भर सुरक्षित कर लिया है। हफ़ीज़ जालंधरी की भांति 'वक़ार' भी सीधी सरल भाषा में मर्मस्पर्शी गीत लिखने में निपुण हैं। उनके गीतों और नज़्मों में करुण और वीर रस दोनों का सम्मिश्रण है।

जीवन

यह जीवन एक कहानी है, कुछ कहता जा कुछ सुनता जा !
इस का अंत औ' आद नहीं है, पूरी किसी को याद नहीं है।
आँसू औ' मुसकान कहानी, कहते हैं सब अपनी बानी।
एक कहानी पाप औ' पुन, हँस कर कह या रोकर सुन !
यह जीवन एक कहानी है, कुछ कहता जा कुछ सुनता जा

कूक पपीहे, कूक !

कूक पपीहे, कूक !
बादल गरजे रैन अँधेरी, सूनी-सूनी दुनिया मेरी,
जीना मेरा होगया दूभर, आँख लगे ना भूक !
कूक पपीहे, कूक !

तू बनबासी खुल कर रोए, मेरा रोना मुझे डुबोए !
तेरी तरह से नेह लगाया, चूक गई मैं चूक !
कूक पपीहे, कूक !
मैं भी अकेली, तू भी अकेला, मोह का सागर, दुख का रेला,
तेरे गले में पी का फंदा, मेरे मन में हूक !
कूक पपीहे, कूक !

पिया बिन नागन काली रात

पिया बिन नागन काली रात !
सेजें सूनी, रात अँधेरी, बालम है परदेस,
डर के मारे जिया निकसत है, कैसे हो परभात[१] !
सखियां झूमें, मंगल गाएं, और तलें पकवान,
मैं मन मारे बैठ रही हूँ, धरे हात पर हात।
रैन अँधेरी, रूख भयानक, साएं साएं होत,
टहने उन के भूत बने हैं, नाग के फन हैं पात !
पिया बिन नागन काली रात !

उस पार

आओ चलें उस पार, साजन, आओ चलें उस पार !
जीवन-सागर लहरें मारे, वायू[२] चंचल, दूर किनारे,
मची है हाहाकार, साजन, आओ चलें उस पार !
नाव के अपनी बनें खेवैया, दुख के भँवर से खेलें नैया,
काट चलें मँझधार, साजन, आओ चलें उस पार !

---

[१]प्रभात। [२]वायु।

साँस का चप्पू कर दें बीमा, है समीप सागर की सीमा,
जहां है सुख का द्वार साजन, आओ चलें उस पार!

कौन बँधाए धीर ?

सखी, अब कौन बँधाए धीर ?

याद पिया की है कलपाती, नहीं रात भर निंदिया आती,
हाय वे अँखियां मदमाती, वह मुखड़ा गंभीर!
फूटी क़िस्मत पलटा पासा, नैनन बरसे नीर!
सावन आया पड़ गए झूले, टपका नीम करेले फूले,
आवें याद जो मुझ को भूले, लगे कलेजे तीर!
छम-छम-छम-छम बादल बरसे, अखियां रोएं औ' जी तरसे,
सखी अब कौन बँधाए धीर ?

आज की रात

प्रीतम, रह जा आज की रात !

आज की रात जियरा धड़के, आज की रात आँख भी फड़के,
जोड़ रही हूं हात प्रीतम, रह जा आज की रात!
बिजली कड़के बादल बरसे, आज की रात निकल नहीं घर से,
आज भरी बरसात, प्रीतम, रह जा आज की रात!
आज की रात जिया घबराए, आज की रात गई कब आए ?
सुन जा मन की बात, प्रीतम, रह जा आज की रात!

जवानी के गीत

देर से गाना गानेवाले, दुनिया को भरमाने वाले!
दिल में चुटकी कब तक लेगा, दादे हसरत[१] कब तक देगा!
तेरा जादू टूट चुका है, आँख से आँसू फूट चुका है!
छोड़ दे अब यह 'आएं-बाएँ'; आ मिल गीत जवानी के गाएं!

हार चुके हैं रोने वाले, रो-रो कर जी खोनेवाले,
बीत चुकी है रात दुखों की, कौन सुने अब बात दुखों की,
हुआ सवेरा, दुनिया जागी, सुख का राग अलाप ऐ रागी!
दुख इस दुनिया से मिट जाएं, आ मिल गीत जवानी के गाएं!

दुनिया औ' अक़बा[२] के धंधे, कुफ़्र[३] और ईमान[४] के फंदे,
आ, औ' उन को तोड़ के रख दें, गम की मुक़द्दर[५] फोड़ के रख दें!
हूरो-सनम[६] की ज़ात न पूछें, दैरो हरम[७] की बात न पूछें,
शोख़ जवानी को अपनाएं, आ मिल गीत जवानी के गाएं!

मेहनत औ' सरमाये[८] का झगड़ा, अपने और पराये का झगड़ा,
यह आक़ाई[९] और गुलामी[१०], इंसानी तदबीर की ख़ामी[११],
गर्दिशे-दौरों[१२] को बदलें, आ तक़दीरे-जहां[१३] को बदलें!
दुनिया को आज़ाद कराएं! आ मिल गीत जवानी के गाएं!

मदमाती मख़मूर[१४] जवानी, चंचल औ' मसरूर[१५] जवानी,

---

[१]आकांक्षा की प्रशंसा। [२]परलोक। [३]अधर्म। [४]धर्म। [५]भाग्य। [६]स्वर्ग में बसने वाले सुंदर युवक और युवतियां। [७]मंदिर और मसजिद। [८]पूँजी। [९]स्वामित्व। [१०]दासता। [११]त्रुटि। [१२]संसार-चक्र। [१३]संसार का भाग्य। [१४]मस्त। [१५]प्रसन्न।

सदमों[1] को ठुकराने वाली, ग़म को आग लगाने वाली,
बेख़ौफ़ औ' बेबाक[2] जवानी, हर इक दाग़ से पाक जवानी,
हक़[3] है जिस के दाएं बाएं, आ मिल गीत जवानी के गाएं!

शक्ती से भरपूर जवानी, बल के नशे में चूर जवानी,
गोलों की बौछार में झूमें, तलवारों की धार को चूमें,
मौत से हंस कर लड़नेवाली, मौत के सिर पर चढ़नेवाली,
बरसाएं अमृत वर्षाएं! आ मिल गीत जवानी के गाएं!

मस्त औ' तुंदो तेज़[4] जवानी, गर्म और आतश-खोज़[5] जवानी,
आँधी औ' तूफ़ान जवानी, रण-चंडी का मान जवानी,
चाल में जिसकी बिजली कड़के, खौफ़ से जिस के दुनिया धड़के,
आ इस को हैजान[6] में लाएं, आ मिल गीत जवानी के गाएं!

तख्त औ' ताज को जो ठुकरा दे, बख्त[7] औ' बाज[8] को जो ठुकरा दे,
मन को खुदी की लाग लगा दे, दुनिया में इक आग लगा दे,
तोड़ दे हर जंजाल के फंदे, फूँक दे सारे गोरख-धंधे,
उस के सुर से गला मिलाएं, आ मिल गीत जवानी के गाएं!

बच्चे की मौत पर

तू बिछड़ कर जायगा मां से कहां? ऐ नौनिहाल!
कौन पालेगा तुझे और कौन रक्खेगा ख़याल?
मीठी-मीठी लोरियां देगा तुझे रातों में कौन?
हां लगाएगा तुझे मेरी तरह बातों में कौन?
गोद में मचलेगा किस की किस से रूठेगा वहां?

[1]दुःखों। [2]निडर, उद्दंड। [3]न्याय। [4]उग्र, प्रचंड। [5]आग बरसाने वाली। [6]जोश। [7]भाग्य। [8]भाग्य-प्रदत्त धन।

सोएगा सीने में किस के, ऐ मेरे दिल, मेरी जां ?
तुझ को जन्नत की फ़िज़ाएं मेरे बिन क्या भाएंगी ?
रोएगा, जब मां की मीठी लोरियां याद आएंगी !
हूरो-गुलमां[1] में वहाँ माना कि अन्नाएं भी हैं ?
जा रहा है जिस जगह तू, क्या वहां माएं भी हैं ?
कोख उजड़ी अपनी हम-चश्मों[2] में कहलाऊँगी मैं ?
आह ! अब किस मुँह से मेरी जान, घर जाऊँगी मैं ?
आ कि तुझ बिन बेक़रारो, मुज़तिरो-नाला हूं[3] मैं,
आ, मेरा नन्हा है तू आ आ कि तेरी मां हूं मैं !

---

[1]स्वर्ग में रहने वाले कम उम्र के युवक और युवतियां। [2]बराबर वालियां।
[3]बेचैन, उद्विग्न और दुखित।

अख़तरुल ईमान

उर्दू के नये कवियों में अख़तरुल ईमान का दर्जा बहुत ऊँचा है। आप दिल्ली निवासी हैं। आल इंडिया रेडियो में काम करने और अलीगढ़ में अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद आप पूना की फ़िल्म कंपनियों से होते हुए बम्बई जा पहुँचे हैं। लिखना उन्होंने कभी बंद नहीं किया। उनकी कविताएँ पहले अपनी मीठी मीठी दर्द, रुमान अंग्रेज़ी और हल्की सी अस्पष्टता के लिये प्रसिद्ध थीं पर अब न केवल वे स्पष्ट होती हैं बल्कि उनमें आशा की—उस आशा की जो इंसान से मायूस नहीं—किरण भी स्पष्ट झलकती है।

सीधी, सरल हिन्दी मिली भाषा में उन्होंने जो कविताएँ और गीत लिखे हैं वे उनके काव्य और व्यक्तित्व की हर झलक लिये हुए हैं।

शबनम के मोती

टूट गए शबनम के मोती टूट गए
बोझ पड़ा किरणों का
भोर की सेज से रात की रानी
गई बहाना करके—
साँझ पड़े पर लौट आऊँगी
तोर माँग में भरके !
टूट गए शबनम के मोती टूट गए
बोझ पड़ा किरणों का !

२

टूट गए शबनम के मोती टूट गए
बोझ पड़ा किरणों का !
सोए हुए हो उठो मुसाफ़िर
जागो हुआ सवेरा !
कहां के मोती कैसी शबनम
सब है मनका अँधेरा !
टूट गए शबनम के मोती टूट गए
बोझ पड़ा किरणों का !

काया

बूँद बूँद बह जाए लहू रहे न झूठी काया !
अनदेखे सागर की मौजें,
हुमक हुमक कर गाएँ।
नाव में सोए हुए मुसाफ़िर,
जागो तुम्हें जगाएँ ।
बूँद बूँद बह जाए लहू रहे न झूठी काया
पाप भँवर से नाव निकलकर,
ढूंढती जाय किनारा !
आँख से ओझल कोई खेवैया !
देता जाए सहारा !
बूँद बूँद बह जाए लहू रहे न झूठी काया !

जीवन-नौका

बहने दे यह जीवन-नौका यूँही ध्यान सहारे !

कभी किनारा मिल जाएगा,
अभी न लंगर तोड़।
बहता चल लहरों के बल पर,
नादाँ इसे न छोड़।

बहने दे यह जीवन नौका यूँही ध्यान सहारे !

गत की मकड़ी जाला बुनकर,
खा गई सूरज रूप।
रूप रंग की माया है सब,
छाँव कहीं न धूप !

बहने दे यह जीवन नौका यूँही ध्यान सहारे !

अजनबी

तू है कच्ची कोंपल अब तक, जिसके लोच में प्यार ही प्यार !
औ' मैं गर्मी सरदी चक्खे, डाली पर इक तनहा पात !
तू सच्चा मोती मैं हीरा, फिरा जो बरसों हाथों हाथ !
तू ऊषा की पहली किरण है, औ' मैं जैसे भीगी बरसात !

तू तारों के नूर की धारा, मैं गहरा नीला आकाश !
मैं हूँ जैसे टूटता नश्शा, तू है जैसे शाख़ बनात !
तू है इक ऐसी शहनाई, जिस की धुन पर नाचे मौत !
तेरी दुनिया जीत ही जीत है, मेरी दुनिया छोड़ यह बात !

तू है एक पहेली जिसको जो बूझे वह जान से जाय !
तू है ऐसी मिट्टी जिससे लाखों फूल चढ़े परवान !

मैं तेरा अंग भी नां छूऊँ, छोड़ यह-भेद भाव की बात !
मैं ने वह सरहद छू ली है, जहां। अमर हो जाएँ प्राण !
ऐ आँखों में खुबने वाली, जाने कौन कहाँ रह जाए !
जीवन की इस दौड़ में पगली, हम दोनों हैं आज अजान !
लेकिन ऐ सपनों की दुनिया, तू चाहे तो रोग मिटे !
मैं ने दुनिया देखी है, तू मेरी बातें झूठ न जान !
जीवन की इस दौड़ में पगली, याद अगर कुछ रहता है !
दो आँसू, इक दबी हँसी, दो जिस्मों की पहली पहचान !

याद

किसकी याद चमक उठी है, धुँधले खाके हुए उजागर !
यूंही चंद पुरानी क़ब्रें, खोद रहा हूँ चुपका बैठा ।
कहीं किसी का मास न हड्डी, कहीं किसी का रूप न छाया ।
कुछ कुतबों पर धुँधले धुँधले, नाम खुदे हैं, मैं जीवन भर !
इन क़ब्रों, इन कुतबों ही को, अपने मन का भेद बताकर ।
मुस्तक़बिल ओ हाल को छोड़े, दुख सहकर मैं कैसे फिरा हूँ ।
माज़ी की घनघोर घटा में, चुपका बैठा सोच रहा हूँ ।
किस की याद चमक उठी है, धुँधले खाके हुए उजागर !
बैठा क़ब्रें खोद रहा हूं, हूक सी बन कर इक इक मूरत ।
दर्द सा बन कर इक इक साया, जाग रहे हैं दूर वहीं से ।
आवाज़ें सी कुछ आती हैं, गुज़रे थे इकबार यहीं से ।
हैरत बन कर देख रही है, हर जानी पहचानी सूरत ।
गोया झूठ हैं ये आवाज़ें, कोई मेल न था इन सब से ।
जिनका प्यार किसी के मन में, अपने घाओ छोड़ गया है ।

जिनका प्यार किसी के मन से सारे रिश्ते तोड़ गया है।
औ' मैं पागल इन रिश्तों को बैठा जोड़ रहा हूँ कब से!
मेरी नस नस टूट रही है ऐसे दर्द के बोझ से जिसको,
अपनी रूह में लेकर मैं कैसे कैसे फिरता था हर सू।
लेकिन आज उड़ी जाती है, इस मिट्टी की सोंधी ख़ुशबू।
जिसमें आँसू बोए थे मैंने, बैठा सोच रहा हूँ जो हो।
इन कुतबों को इन क़ब्रों में दफ़नादूँ औ' आँख बचा लूँ!
इस मंज़र की तारीकी जो रह जाए वह ही अपना लूँ!

नारस

नगर नगर के देस देस के, परबत टीले और बयाबाँ,
खोज रहे हैं अब तक मुझ को, खेल रहे हैं मेरे अरमाँ।
मेरे सपने मेरे आँसू, उन की छलनी छाँव में जैसे,
धूल में बैठे खेल रहे हों, बालक बाप से रूठे रूठे!

दिन के उजाले, साँझ की लाली, रात की अँधियारी से कोई।
मुझ को आवाज़ें देता है, आओ, आओ, आओ, आओ!
मेरी रूह की ज्वाला मुझ को, फूँक रही है धीरे धीरे,
मेरी आग भड़क उठी है, कोई बुझाओ कोई बुझाओ!

मैं भटका भटका फिरता हूँ, खोज में तेरी जिसने मुझ को
कितनी बार पुकारा लेकिन, ढूँढ न पाया अब तक तुझ को।
मेरे बच्चे मेरे बालक, तेरे कारण छूट गए हैं।
तेरे कारन जग से मेरे, कितने नाते टूट गए हैं।
मैं हूँ ऐसा पात, हवा में पेड़ से जो टूटे औ' सोचे।

धरती मेरी गोद है या, घर यह नीला आकाश जो सिर पर।
फैला फैला है, औ' इसके सूरज चाँद सितारे मिल कर।
मेरा दीप जला भी देंगे, या सबके सब रूप दिखा कर।
एक एक कर खो जाएंगे, जैसे मेरे आँसू अकसर।
पलकों में थर्रा थर्रा कर, तारीकी में खो जाते हैं।
जैसे बालक माँग माँग कर, नये खिलौने सो जाते हैं!

अनजान

तुम हो किस वन की फुलवारी अता पता कुछ देतीं जाओ!
मुझ से मेरा भेद न पूछो, मैं क्या जानूं मैं हूं कौन?

चलता फिरता आ पहुँचा हूं राही हूं, मतवाला हूं,
उन रंगों का जिन से तुमने अपना खेल रचाया है,
उन रंगों का जिन से तुमने अपना रूप सजाया है,
उन गीतों का जिनकी धुन पर नाच रहे हैं मेरे प्राण,
उन लहरों का जिनकी रौ में डूब गया है मेरा मान,
मेरा रोग मिटाने वाली, अता पता कुछ देती जाओ,
मुझ से मेरा भेद न पूछो, मैं क्या जानू मैं हूं कौन?
मैं हूं ऐसा राही जिसने, देस देस की आहों को,
ले लें कर परवान चढ़ाया, और रसीले गीत बुने,
चुनते चुनते जग के आँसू, अपने दीप बुझा डाले,
मैं हूं वह दीवाना जिसने, फूल लुटाए खार चुने,
मेरे दीपों औ' फूलों का, रस भी सूख गया था आज,
मेरे दीप अँधेरा बन कर, रोक रहे थे मेरे काज,
मेरी जोत जगानेवाली, अता पता कुछ देती जाओ!
मुझ से मेरा भेद न पूछो, मैं क्या जानूं मैं हूं कौन?

एक घड़ी इक पल भी सुख का, अमृत है इस राही को,
जीवन जिस का बीत गया हो काँटों पर चलते चलते,
सब कुछ पाया प्यार की ठंडी छाँव जो पाई दुनिया में,
उस ने जिस की बीत गई हो बरसों से जलते जलते,
मेरा दर्द बटानेवाली अता पता कुछ देती जाओ!
मुझ से मेरा भेद न पूछो, मैं क्या जानू मैं हूँ कौन ?

बहती घड़ियां

मैं फिर काम में लग जाऊँगा आ फ़ुरसत है प्यार करें,
नागिन सी बल खाती उठ औं' मेरी गोद में आन मचल!
भेद भाव की बस्ती में कोई भेद भाव का नाम न ले,
हस्ती पर यों छा जा बढ़ कर शरमिंदा हो जाए अजल!
जिसकी तुंद लपट में कितने हरे भरे मैदान आए,
जिसकी तेज़ लपट में अब तक आ गए कितने फूल औ फल!
छोड़ यह लाज का घूँघट कब तक रहेगा इन आँखों के साथ,
चढ़ती रुत है ढलता सूरज खड़ी खड़ी यूं पाँव न मल!
फिर यह जादू सो जाएगा, समय जो बीता, गहरी नींद,
जो कुछ है अनमोल है अब तक, इक इक लमहा इक इक पल!
बन प्यारी मिट्टी की खुशबू उसका सोंधा सोंधापनस,
सब कुछ छिन जाएगा इक दिन अब भी वक़्त है देख सम्हल!
नर्म रगों में मीठी मीठी टीस जो यह उठती है आज,
बढ़ती मौज का रेला है, फिर टीस न इक उठेगी कल!
मस्त रसीली आँखों से यह छलकी छलकी सी इक शै,
सने आज उठाया जिसको समझो उसके भाग सफल!

मैं तेरे शोलों से खेलूं, तू भी मेरी आग से खेल,
मैं भी तेरी नींद चुराऊं, तू भी मेरी नींदें छल!
नर्म हवा के झोंकों ही से खुलती है फूलों की आँखें,
वरना बरसों साथ रहे हैं ठहरा पानी बन्द कँवल!

शाम

सूरज डूबा पच्छिम देस में चौंकी रात की रानी,
लौटे थक थक पंख पखेरू कर करके मन मानी!

कर कर के मनमानी लौटे,
जग साथी जग बैरी!
अपनी बात का मोल ही क्या है,
अपनी बात जो ठहरी!

सूरज डूबा पच्छिम देस में, चौंकी रात की रानी,
साँच को आँच नहीं यह सच है, किसने बात यह मानी!

ओढ़ के तुम भी आजाओ अब,
गोधूली की बेला!
बैठके हम तुम भी हँस रो लें,
जीवन है इक मेला!

सूरज डूबा पच्छिम देस में चौंकी रात की रानी,
तक तक सोएँ राह किसी की कलियाँ धानी धानी!
सूरज डूबा पच्छिम देस में चौंकी रात की रानी!

सुबह

सूरज निकला रैन भँवर से,
किरणें उठीं लजाती!

जाग जाग री नींद की माती,
नैन कँवल से रस टपकाती!

गूँज गूँज लगे भँवरे आने,
बेबस कलियों को बहकाने!

सूरज निकला रैन भँवर से,
किरणें उठी लजाती!

सूरज निकला रैन भँवर से,
किरणें उठी लजाती!

छुम छुम करती छुन छुन करती!
कली कली से अनबन करती!

रस सागर में नहाती आई,
सुबह नाचती गाती!

सूरज निकला रैन भँवर से,
किरणें उठी लजाती!

२६ जनवरी १६३० को याद में

हैं ज़ख़्म वही अंगूर वही रिसता है अभी नासूर वही!
बरसात की वह घनघोर घटाएँ, जाड़ों की तन्हा रातें
जेल की वहशी दीवारें, मायूस अज़ीज़ों[1] की यादें!
ग़ैरों के वह सब जौरो सितम[2], वह रंजो मुहब्बत[3] वह फ़रयादें मे!
ऐ यौमे मुक़द्दस तेरी क़सम, भूला मैं नहीं उन यादों को!

---

[1]निराशसम्बंधियों की यादें। [2]अत्याचार। [3]दुख। व्यथा [4]पवित्र दिन।

हैं ज़ख्म वही अंगूर वही, रिसता है अभी नासूर वही !
और भूल सके कोई कैसे, वह दर्दभरी विपता सारी !
थीं कितनी जानें भेट चढ़ीं, जब इस ने आज़ादी पाई !
आई वह किसी की महफ़िल में पर हमको झलक कब दिखलाई !
आज़ादी मिली नव्वाबों को, राजाओं को, शहज़ादों को !
हैं ज़ख्म वही, अंगूर वही, रिसता है अभी नासूर वही !

आज़ाद हुए सारे टोड़ी, दुखिया हैं मगर इंसान सभी !
आज़ाद हुए हैं मिल मालिक, आज़ाद हुए धनवान सभी !
मज़दूर की लूट है उतनी ही है, उसके लिये अनजान सभी !
जब जेल वही मक़्तल[१] भी वही, फिर कोसिए किन जल्लादों को !
हैं ज़ख्म वही, अंगूर वही, रिसता है अभी नासूर वही !

ऐ रावी के जल की धारा, हो याद तुझे वह नज़्ज़ारा !
वह जोश से झंडा लहराना, जनता की गर्ज वह जयकारा !
वह अहद, वह पैमान, और वह क़सद अपना है अभी वह भी नारा !
हैं ज़ख्म वही, अंगूर वही, रिसता है अभी नासूर वही !

---

[१]वधस्थल ।

क़तील शफ़ाई

श्री क़तील शफ़ाई सीमाप्रान्त (पाकिस्तान) के गाँव हरिपुर (हज़ारा) के रहने वाले हैं। वे अभी जवान हैं। उनकी शायरी की उमर भी ज़्यादा नहीं पर इतने ही अर्से में उनकी कविता कई धाराओं में बह निकली है। उनके गीत सीधे, सरल और गीतितत्व से भरपूर हैं।

दानी से

दान तेरे सब झूटे !
दानी ,
दान तेरे सब झूटे !

भिक्षा माँगे भूखी धरती ,
मरती क्या ना करती !
तब सींचा है बाग़ को तूने ,
सड़ गए जब गुल-बूटे !
दानी ,
दान तेरे सब झूटे !

तू माया का जाल बिछाए ,
भूकों को उलझाए !
तू इतना अहसान जताए ,
बिजली उन पर टूटे !

दानी,
दान तेरे सब झूटे !
अन्न जल तेरे घर के चाकर,
हम सोएँ ग़म खाकर !
तोला छीने माशा बाटे,
वह भी हम से लूटे !
दानी,
दान तेरे सब झूटे !

साजन चला गया

सावन चला गया,
झूले उतार कर मेरा साजन चला गया !
सावन चला गया !
उड़ती हुई वह बदली जाने किधर गई,
आई गुज़र गई !
बरसे बिना पलट कर आकाश पर गई,
क्या ज़ुल्म कर गई !
दुनिया बदल गई है कि साजन चला गया,
सावन चला गया !
साजन गया है जब से झूले उतार कर,
सावन गुज़ार कर !
रोती हूं रात दिन मैं उसको पुकार कर,
दुखड़ों से हार कर !
मेरे सुखों का तोड़ के दर्पण चला गया,
सावन चला गया !

नयनों में नीर छलके आँसू बहाऊं मैं,
सदमें उठाऊँ मैं !
परदेस जानेवाले तुझ को बुलाऊं मैं,
क्या चैन पाऊँ मैं !
जब तेरे साथ साथ मेरा मन चला गया !
सावन चला गया !

मेरा दुपट्टा

मेरा दुपट्टा लहरा रहा है,
सावन का बादल याद आ रहा है !

प्रीतम ने मुझको मलमल मँगादी,
मेरी ख़ुशी की दुनिया बसा दी !
रंग इस की ख़ातिर मैंने मँगाया,
अबरक़ मिला कर इसको लगाया !

तारे फ़िज़ा में चमका रहा है,
मेरा दुपट्टा लहरा रहा है !

हल्का गुलाबी रंग इस पै आया,
जैसे शफ़क़ का पानी में साया !
जैसे फ़िज़ा में शोला सा भड़का,
जैसे किसी ने सेन्दूर छिड़का !

रंगत पै अपनी इतरा रहा है,
मेरा दुपट्टा लहरा रहा है !

शीशम के पत्तो, इस को हवा दो,
सूरज की किरणों, इस को सुखा दो !

आए न इस में कोई खराबी,
पहले था गोरा अब हो गुलाबी !

रंगी फ़िशाने दुहरा रहा है,
मेरा दुपट्टा लहरा रहा है !

पायल मँगा दो

मोहे चाँदी की पायल मँगा दो सजन !

खाली पैरों से पनघट को क्या मैं चलूं !
अपनी सखियों को देखूं तो मन में जलूं !
वह तो नाचें मैं शरमा के मुँह फेर लूं !

मोहे पनघट की रानी बना दो सजन !
मोहे चाँदी का पायल मँगा दो सजन !

कल को मेला लगेगा सजन गाँव में !
होगी झंकार हर आम की छाँव में,
फिर तो काँटे चुभेंगे मेरे पाँव में,

मोरे पैरों में चाँदी बिछा दो सजन !
मोहे चाँदी की पायल मँगा दो सजन !

अब तो पायल बिना कल न पाऊँगी मैं,
जूती चाँदी के तारों की चाहूँगी मैं,
उस पै चाँदी की पायल सजाऊँगी मैं,

मोहे चाँदी की पायल मँगा दो सजन !
मोहे चाँदी की पायल मँगा दो सजन !

इक चाँद गया, इक चाँद आया

इक चाँद गया, इक चाँद आया !

बरखा ने रंग जमाया है,
बूंदों ने शोर मचाया है,
इक चाँद को बदली ढाँप गई,
इक चाँद ने आँचल सरकाया !

इक चाँद गया, इक चाँद आया !

आकाश के चाँद को जाने दो,
धरती के चाँद को आने दो,
वह दूर यह अपनी गोद में है,
इस चाँद को मैंने अपनाया !

इक चाँद गया, इक चाँद आया !

सावन की घटाएँ

सावन की घनघोर घटाएँ गुलज़ारों पर छाएँ !
गर्जे बरसे चार तरफ़ बूंदों का जाल बिछाएँ !

फूलों को बहलाएँ !
कलियों में बस जाएँ !

मुस्काएँ
लहराएँ

गुलज़ारों में खोल दिए हैं बरखा ने मैखाने !
मस्त हवा में छलक रहे हैं फूलों के पैमाने !

दिल की प्यास बुझाने !

आए रिंद पुराने !

मस्ताने

दीवाने

कैसी उभरी उभरी सी है आज नदी की छाती !

यह उसकी मुँहज़ोर जवानी साहिल से टकराती !

मौजों पर इतराती !

गाती शोर मचाती !

इठलाती

बल खाती

सावन आया साजन आओ और न अब तरसाओ !

झोका बन कर जाने वाले बादल बन कर आओ !

बूंदों में मुस्काओ !

गीत रसीले गाओ !

आजाओ !

आजाओ !

बादल बरसे

छम छम काले बादल बरसे रिम झिम नयना रोते हैं !

सावन भादों की रुत में कुछ ऐसे दिन भी होते हैं !

शोर मचाती बून्दनियां जब गीत बखेरें,

बिरहन की रोती आशा से आँखे फेरें,

भीगी पलकों के साये में टूटे सपने सोते हैं !

सावन भादों की रुत में कुछ ऐसे दिन भी होते हैं !

डाली डाली से जब खेलें मस्त हवाएँ,
आहों के तूफ़ानों से हम जी बहलाएँ,
या अश्कों की नदी में हम आँचल मन का धोते हैं!
सावन भादों की रुत में कुछ ऐसे दिन भी होते हैं!

काली काली सी बदली जब घिर कर छाए,
पी बिन बरखा रुत में अपना जी घबराए,
पलकों में अश्कों के मोती सौ सौ बार पिरोते हैं!
सावन भादों की रुत में कुछ ऐसे दिन भी होते हैं!

नाच रही होती है जब बरखा की रानी,
बाग़ों पर आ जाती है भरपूर जवानी,
अपने मन की खेती में हम बीज दुखों का बोते हैं!
सावन भादों की रुत में कुछ ऐसे दिन भी होते हैं!

पायल बाजे

पायल बाजे!

छन छन छन छन पायल बाजे!
एक सुहागिन नयी नवेली,
आँगन में जब चले अकेली!
पैरों में चाँदी मुस्काए,
पग पग मीठा गीत सुनाए,
मन में आशा आन बराजे!

पायल बाजे!

छन छन छन छन पायल बाजे!

उठता जोबन मस्त जवानी,
आई है संगीत की रानी,
नयनों से कुछ बोल रही है,
इक चिड़िया पर तोल रही है,
झूमे, क्या कंगले क्या राजे!

पायल बाजे!

छन छन छन छन पायल बाजे!

मैं तो नाहीं करूंगी सिंगार

मैं तो नाहीं करूंगी सिंगार, ओ परदेसी बलम,
तोड़ डालूंगी फूलों के हार, ओ परदेसी बलम,
रो रो के मैंने सावन गुज़ारा!
बहती रही है नयनों की धारा!
चमकती न काजल की धार, ओ परदेसी बलम!
मैं तो नाहीं करूंगी सिंगार, ओ परदेसी बलम!
तोड़ डालूंगी फूलों के हार, ओ परदेसी बलम!
भादों भी आया रोता रूलाता,
मेरे दुखों पर आँसू बहाता,
गाता कोई क्या मल्हार, ओ परदेसी बलम!
मैं तो नाहीं करूंगी सिंगार, ओ परदेसी बलम!
तोड़ डालूंगी फूलों के हार, ओ परदेसी बलम!
सावन भूले चादों की रतियां,
ऐसे हैं जैसे सपनों की बतियां,

चलती है मन पै कटार ओ परदेसी बलम !
मैं तो नाहीं करूंगी सिंगार ओ परदेसी बलम !
तोड़ डालूंगी फूलों के हार ओ परदेसी बलम !

बिरहा के दुखड़े अब क्या सुनोगे,
बिरह के आँसू अब क्या चुनोगे,

बाजे न टूटी सितार ओ. परदेसी बलम !
मैं तो नाहीं करूंगी सिंगार ओ परदेसी बलम !
तोड़ डालूंगी फूलों के हार ओ परदेसी बलम !

दाता की देन

यह सब तेरी देन है दाता, मैं इसमें क्या बोलूं ?

तूने जीवन जोत जगाई,
मैंने पग पग ठोकर खाई,

जौन डगर पर डाले तू मैं, उसी डगर पर डोलूं !
यह सब तेरी देन है दाता, मैं इस में क्या बोलूं ?

तूने तो मोती बरसाए,
मैंने काले कंकर पाए !

मैं झोली में कंकर लेकर, मोती जान के रोलूं !
यह सब तेरी देन है दाता, मैं इसमें क्या बोलूं ?

तूने फूल सुहाने बाँटे,
मेरे भाग में आए काँटे,

मैं झोली में काँटे ले कर, फूल समझ कर तोलूं !
यह सब तेरी देन है दाता, मैं इस में क्या बोलूं ?

तूने भेजे अमृत प्याले,
पड़ गए मुझको जान के लाले,
मैं विस को भी अमृत जानूं, तेरा भेद ना खोलूं!
यह सब तेरी देन है दाता, मैं इस में क्या बोलूं!

मेरे पी तो आगए

जीवन की फुलवारी महकी, आशाओं के फूल खिले!
रोता छोड़ के जाने वाले, हँसी खुशी फिर आन मिले!

देख पपीहे दूर दूर तक प्रेम बदरवा छा गए,
भूले बिसरे सपने फिर से नयनों में लहरा गए,
अब काहे को 'पी, पी' बोले मेरे पी तो आ गए!

तान कुछ ऐसी छेड़े के, कि जिससे मेरे मन की तान मिले!
जीवन की फुलवारी महकी, आशाओं के फूल खिले!

प्रीतम मुझ से रूठ गए थे, चले गए थे छोड़ के,
मैं दुखयारी बरसों रोई मन के छाले फोड़ के,
प्रीतम को भी चैन न आया मेरी आशा तोड़ के!

जब वे लौटे धीर बँधाने, मन के सारे घाव सिले!
जीवन की फुलवारी महकी, आशाओं के फूल खिले!

बीती बातें भूल के फिर से मैं पीतम की हो गई,
प्यार से मैं उनकी बाहों पर मीठी निंदिया सो गई,
साँसों का इक तारा बाजा मैं गीतों में खो गई!

जब वे नयनों में मुस्काए, मेरे मन के तार हिले!
जीवन की फुलवारी महकी, आशाओं के फूल खिले!

स्व० पंडित इंद्रजीत शर्मा

पंडित इंद्रजीत शर्मा माछरा, ज़िला मेरठ के रहनेवाले थे। उर्दू ग़ज़लों और नज़्मों में आपने काफ़ी नाम पाया। 'नैरंगे-फ़ितरत' के नाम से आप की कविताओं का संग्रह भी छपा। गीतों की इस धारा से आप भी प्रभावित हुए और आप की लेखनी ने अनायास ही आप से गीत लिखवा लिये। उर्दू के गीत लिखने वालों में आप का नाम भी हफ़ीज़ जालधंरी और मक़बूल हुसेन अहमदपुरी के साथ लिया जाता है।

वे तो रूठ गये

वे तो रूठ गए मैं मानती रही!

कुछ बात न पूछ सकी मन की, पिया चलते गए मुझे छोड़ गए।
सब प्रीत की रीत बिसार गए, सब प्रेम के बंधन तोड़ गए।
मैं प्रेम ही प्रेम जताती रही, वे तो रूठ गए मैं मनाती रही!

क्या मोह भला है साधू का, क्या ममता है संन्यासी की!
कुछ तरस न खाया दासी पर, कुछ बात न पूछी दासी की।
यों ही नयनों से नीर बहाती रही!
वे तो रूठ गए मैं मनाती रही!

नैया है मझधार

बेड़ा, कौन लगाए पार!

नदिया के चौपाट खुले हैं, धरती अंबर रूठ रहे हैं,
पापी मनों में पाप बसे हैं, नैया है मँझधार!

कोसों है अब दूर किनारा, लहरें मार रही है धारा!
बेबस नैया खेवनहारा, काम न दे पतवार!
सारी दुनिया है मदमाती, कोई नहीं है संगी-साथी,
मतलब के सब गोती-नाती, मतलब का संसार!
कुछ भी किसी को ध्यान नहीं है, समझ नहीं है, ज्ञान नहीं है,
मुर्दा दिलों में जान नहीं है, यही है सोच-विचार!
बेड़ा कौन लगाए पार?

भिक्षा प्रेम की

भिक्षा प्रेम की, प्रीतम, मैं तो आई लेने भिक्षा प्रेम की!
प्रीतम दासी की सुध लीजो, कब से खड़ी हूं किरपा कीजो,
वारी जाऊं, दीजो दीजो—भिक्षा प्रेम की!
प्रीतम, मैं तो लेने आई भिक्षा प्रेम की!
मेरे स्वामी मेरे प्यारे, नाथ मेरे जीवन के सहारे,
माँगने आई तेरे द्वारे—भिक्षा प्रेम की!
प्रीतम, मैं तो लेने आई भिक्षा प्रेम की!
दूर से चल कर आई भिखारन, कर दो मुक्त मेरा यह बंधन,
देदो लेकर मेरा जीवन—भिक्षा प्रेम की!
प्रीतम, मैं तो लेने आई भिक्षा प्रेम की!

तोता

उड़ जा देस-बिदेस, तोते, उड़ जा देस बिदेस!
मैं जाऊं तुझ पर बलिहारी, विरह का रोग लगा हैं भारी,
रूठ गए मुझसे गिरधारी, चले गए परदेस!

तारे गिन-गिन रात बिताऊं, दिन में पल भर चैन न पाऊं,
आँसू पीती हूं ग़म खाऊं, ले जा यह संदेस !
मिल जाएं तो उन से कहना, दूभर हो गया तुम बिन रहना,
तज दिया मैं ने सारा गहना, जोगन का है भेस !

भूल आई री

भूल आई री, भूल आई, भूल आई, भूल आई री !
अपना यह मन सखी भूल आई री !
नयनों की चोट में, पलकों की ओट में,
प्यारे की जीत में, मस्ती के गीत में,
बंसी की तान में, एक ही उठान में !
भूल आई री, भूल आई, भूल आई, भूल आई री !
अपना यह मन सखी भूल आई री !

जोगी का गीत

बाबा भर दे मेरा प्याला !
परदेसी हूं दुख का मारा, फिरता हूं मैं मारा-मारा,
जग में कोई नहीं सहारा, खोल गिरह का ताला !
जोगी हूं मैं दान का प्यासा, निर्बुद्धी हूं ज्ञान का प्यासा,
चंचल मन है ध्यान का प्यासा, कर दे अब मतवाला !
तेरे कारन जोग लिया है, ऐश छोड़ कर सोग लिया है,
एक निराला रोग लिया है, पड़ा जिगर में छाला !
बाबा, भर दे मेरा प्याला !

सावन बीता जाए

सावन बीता जाए, सजनी, प्रीतम घर नहीं आए !
कैसे काटूं रात विरह की नागन बन-बन खाए !

ठंडी-ठंडी पुरवा सनके, बादल घिर-घिर छाए,
नन्हीं नन्हीं बूँदे टपकें, औ' बिजली लहराए !
याद पिया की मेरे दिल को रह-रह कर तड़पाए,
सावन बीता जाए, सजनी, प्रीतम घर नहीं आए !

मोर, पपीहा, झींगुर, सारस, मिल कर शोर मचाएं,
नाचें कूदें करे कलोलें, फूलें नही समाएं,
नाच रंग औ' खेल कूद की बात न मन को भाए,
सावन बीता जाए, सजनी, प्रीतम घर नहीं आए !

कुंज-कुंज में पड़े हैं झूले, मिल कर सखियां झूलें,
पींग बढ़ाएं, तान उड़ाएं, अपने मन में फूलें,
हँसी खुशी की बात यह मेरे मन को और जलाए,
सावन बीता जाए, सजनी, प्रीतम घर नहीं आए !

'हफ़ीज़' होशियारपुरी

'हफ़ीज़' होशियारपुरी पहले 'आल इण्डिया रेडियो' में काम करते थे, अब पाकिस्तान रेडियो में काम करते हैं। यद्यपि वे अब एक अच्छे पद पर आसीन हैं परन्तु बहुत से दूसरे कवियों की भाँति उनका यह पद उन्हें लेकर नहीं बैठ गया। वे अब भी निरतंर लिखते हैं। हफ़ीज़ का खास मैदान ग़ज़ल है। गीत उन्होंने बहुत नहीं लिखे, पर जो भी लिखे हैं सुन्दर लिखे हैं।

अतीत की याद

नाव चाँद, आकाश था सागर, तारे खेवनहार थे प्यारे,
मेरी रामकहानी सुनकर जाग उठे थे नींद के माते।
काश वह रातें फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते!

दर्शन जल की खातिर जाते, दर्शन प्यासे प्रेम दुवारे,
झूठी दुनिया को तज देते अपनी दुनिया आप बसाते।
काश वह रातें फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते!

प्रीत के आगे प्रीतम प्यारे, झूठ हैं रिश्ते-नाते सारे,
मैं अपनाता मन यह तुम्हारा, मेरे मन को तुम अपनाते।
काश वह रातें फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते!

पलकों पर यूं नीर चमकते, जैसे अंबर पर हों तारे,
रो-रो रात बिताते साजन, अपनी अपनी दशा सुनाते।
काश वह रातें फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते!

काली रात

कैसे काटूँगी उन बिन काली रात !
याद आए वह पल-पल, छिन-छिन, नींद उचाट हुई है उस बिन,
थक गई आँखें तारे गिन-गिन, होत नहीं परभात !
कैसे काटूँगी उन बिन काली रात !

कब आएगा साजन प्यारा, साजन मेरा राजदुलारा,
इन सूनी आँखों का तारा, कोई बताओ यह बात !
कैसे काटूँगी उन बिन काली रात !

हम पर दया करो भगवान !

हम पर दया करो भगवान !
मेरा जीवन तुम से उजागर, मैं प्यासी तुम अमृत सागर,
आओ, भर दो मन की गागर, जान में आ जाएगी जान।
हम पर दया करो भगवान !

नौका जब मँझधार में आए, रह-रह कर तूफ़ान डराए,
कौन फिर उस को पार लगाए, अब तो एक तुम्हारा ध्यान !
हम पर दया करो भगवान !

दिल लेकर मुँह मोड़ न जाना, मेरी आशा तोड़ न जाना,
मन-मंदिर को छोड़ न जाना, यह नगरी तुम बिन सुनसान।
हम पर दया करो भगवान !

आग लगे

आग लगे इस मन में आग,
लो फिर रात बिरह की आई, जान मेरी तन में घबराई,
चारों ओर उदासी छाई, अपनी क़िस्मत अपने भाग,

आग लगे इस मन में आग !

काली औ' बरसती रैन, उस बिन नींद को तरसें नैन,
जिस के साथ गया सुख-चैन, उस की याद कहे—'अब जाग'!
आग लगे इस मन में आग !

जिस दिन से वह पास नहीं है, कोई ख़ुशी भी रास नहीं है,
जीने तक की आस नहीं है, जान को है अब तन से लाग।
आग लगे इस मन में आग !

कौन जिये और किस के सहारे, मीठे-मीठे बोल सिधारे,
गीत कहां वह प्यारे-प्यारे ? अब वह तान, न अब वह राग !
आग लगे इस मन में आग !

दरस दिखा कर जो छिप जाए, कौन ऐसे से प्रीत लगाए ?
क्यों अपनी कोई दसा सुनाए, छोड़ मुहब्बत का खटराग !
आग लगे इस मन में आग !

प्रेमनगर में

झूठी दुनिया से मुँह मोड़ें, धन औ' लोभ की बातें छोड़ें,
प्रीत की रीत से नाता जोड़ें, मिल कर सारे गीत यह गाएं,
प्रेमनगर में घर बनवाएं !

क्या है जगवालों के धंदे, सब देखे मतलब के बंदे,
हाथों में हैं पाप के फंदे, मन में पी की लगन लगाएं !
प्रेमनगर में घर बनवाएं !

प्रेमनगर इक स्वर्ग है प्यारे, पी हैं जिस के राजदुलारे,
जाग उठेंगे भाग हमारे, जाकर हम उस में बस जाएं !
प्रेमनगर में घर बनवाएं !

बुरी बला है प्रीत

साजन, बुरी बला है प्रीत !

बिरह के दुख हँस-हँस कर सहना, मुँह से कोई बात न कहना,
कम-कम मिलना चुप-चुप रहना, यह है प्रीत की रीत।
साजन, बुरी बला है प्रीत !

ना कहीं आना ना कहीं जाना, सब से जी का भेद छिपाना,
तनहाई में बैठ के गाना, जोग की धुन में गीत।
साजन, बुरी बला है प्रीत !

आँख में आँसू, बंद ज़बानें, ब्याकुल जिउरे दुखिया जानें,
किस की सुनें औ' किस की मानें ? कौन किसी का मीत ?
साजन, बुरी बला है प्रीत !

प्रीत के दुख को जी से चाहें, जैसे हो यह रीत निबाहें,
प्रीत है ठंडी ठंडी आहें, प्रीत की आग है शीत।
साजन, बुरी बला है प्रीत

विश्वामित्र आदिल

विश्वामित्र आदिल भी युवक कवि हैं। आल इंडिया रेडियो से होते हुए दूसरे साथियों के साथ बम्बई की फ़िल्मी दुनिया में जा पहुँचे हैं और अभी तक वहीं जमे हुए हैं। उनके अपने जीवन की बैचेनी, उलझन और अस्पष्टता उनकी कविताओं में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। हल्की सी अस्पष्टता, हल्का सा रुमान और यथार्थता की कटुता का विष—ये तीनों उनकी कविताओं में अज्ञात रूप से एक दूसरे में समोए रहते हैं परन्तु उनके गीत सीधे सरल तथा बोधगम्य हैं। यथार्थता की कटुता और करुणा यहां भी है, परन्तु दुर्गमता नहीं।

जीवन के धारे पर

मांझी—(देस से दूर नाव में)

ही हो......ही हो......ही हो......ही हो!
नाव यह जीवन आशाओं की
खाए झकोले डग मग डोले
डूब न जाए
आओ आओ ज़ोर लगाओ!

ही...हो......ही.. हो......ही...हो......ही...हो!

मांझी की पत्नी का पहला पत्र

ओ मांझी! ओ जीवन नाव के प्यारे मांझी!
पास नहीं तू और यह बर्फ़ के ठंडे गाले,

जैसे पैरों से दल दल बन कर चिमटे हैं
ये नोकीले पेड़, ये कुटिया के रख वाले
ऐसे घूर रहे हैं मानों भूत खड़े हैं!
ये दो सिमटे सिमटे, सिकुड़े सिकुड़े रस्ते
जाने किन खाए क़दमों को ढूंढ रहे हैं!
कोई नहीं, कोई भी नहीं है!
हाँ, दोपहर को डाक का हरकारा आया था,
और चमकते चाँदी के सिक्के लाया था!
इन सिक्कों से तेरे प्यार की याद आती है!
रात मगर जब अपना जादू फैलाती है!
बालों में जेगन की बास मचल जाती है!
घबराती हूँ, घबराती हूँ!
जीते जी ही मर जाती हूँ!

मांझी (देस से दूर नाव में)

ही हो......ही हो......ही हो......ही हो!
चारों ओर अँधेरा छाए,
तूफानों का ज़ोर डराए,
नाव अकेली अल्लाहबेली,
एक किनारा हटता जाए,
एक किनारा पास बुलाए!
ही हो......ही हो......ही......हो ही हो!

मांझी की पत्नी का दूसरा पत्र

ओ मांझी! ओ जीवन नाव के प्यारे मांझी!

सूरज की चमकीली किरणें, फिर देवदारों पर चमकी हैं,
नीली नीली झील पै हर इक नाव से लहरें खेल रही हैं,
लेकिन इन में अपनी थीं जो नाव वह अपनी नाव नहीं हैं,
दूध सी गोरी बतखें भी अब और के आँगन में चुगती हैं,
डरती हूँ, यह बरसों की मटियाली कुटिया बिक जाएगी!
यदि कपड़े कुछ और फटे तो लाज न क्या मुझ को आएगी?
बाक़ी सब कुछ ठीक है लेकिन जाने क्यों यह जी भर आया,
हरकारा भी कोई न चिठ्ठी तेरी खैर खबर की लाया!
सोच रही हूं, सोच रही हूं!—
हां याद आया झील किनारे उस शीशों वाले बंगले में,
दो दिन से इक तीखी मूँछों वाले साहब आन बसे हैं!
उनके पापी दीदे जाने दूर ही दूर से क्या कहते हैं!
घबराती हूं, घबराती हूँ!
जीते-जी ही मर जाती हूँ,——

मांझी (देस से दूर नाव में)

ही——हो.....ही——हो.....ही——हो......ही——हो!
खेने वाला खेता जाए,
चाहे किनारा पास न आए,
झिल मिल चमके आस का दीपक!
सागर नाचे मांझी गाए!
जीने वाले जी ही लेंगे,
जीवन अमरित पी ही लेंगे!
ही——हो.....ही——हो.....ही——हो......ही——हो!

मांझी की पत्नी का तीसरा पत्र—

ओ मांझी ! ओ जीवन नाव के प्यारे मांझी !
अपनी मटयाली कुटिया अब ग़ैरों से आबाद हुई है,
"नन्ही जोरू" शीशों वाले बँगले की अब आन बसी है,
खाना अच्छा, पीना अच्छा, रहना अच्छा, जीना, अच्छा,
पर सिन्दूर भरी शरमीली माँग लटों से रुठ गई है।
हाथ वही हैं, पाँव वही हैं, आँख वही हैं, कान वही हैं,
फिर क्यों मेरे जीवन पर पतझड़ की वीरानी छाई है!
सोच रही हूं—सोच रही हूं !

और ?—नहीं कुछ और नहीं कहना है, बस, इतना कहना है !
तुझ को मेरा दुख सहना था, मुझ को तेरा दुख सहना था,

मांझी (दूर देस नाव में)

ही—हो......ही—हो......ही—हो......ही—हो !

दूर घटा घनघोर वही है,
तूफ़ानों का ज़ोर वही है,
टूट गई पतवार तो फिर क्या,
नाव न पहुँची पार तो फिर क्या ?
आने वाली नाव का रस्ता,
देख रहा है लाल सवेरा,
एक नये मांझी की ख़ातिर,
आख़िर छुट जाएगा अँधेरा !
मिटते मिटते बनने वाली,
उम्मीदों का शोर वही है !

अनथक हैं मुँहज़ोर थपेड़े,
सागर चारों ओर वही है।

ही——हो……ही——हो……ही——हो……ही——हो !

नये भिखारी का गीत

कितने आने जाने वाले,
साये बन कर रूठ गए हैं।
कितने दुख के काले दरिया,
सूने रस्तों पर बहते हैं!

कितने ही अनजाने नग़मे,
बे गाए खामोश हुए हैं!
कितने सपने कितनी आहें,
रौन्दने वाले रौंद गए हैं!

मुझको इससे मतलब बाबा!
देजा बाबा कुछ तो देजा!

मोहन, रूपा, हामिद, सुग़रा,
कैसे सुन्दर फूल खिले हैं!
उनको खुशबूओं के बादल,
पल पल छिन छिन घिर आते हैं!

कितनी आँखे जाग उठती हैं,
कितने ही लब मिल जाते हैं!

मुझको इस से मतलब बाबा!
देजा बाबा कुछ तो देजा!

चाँद सितारों की यह ज्योती,
कहते हैं ऐसी वैसी है!
जिसकी डोर से बेबस होकर,
जीवन की मछली लटकी है!

डोर खिंचे तो आँसू ढलके,
ढील मिले तो नर्म हँसी है!
सच है या है झूठ है सारा,
मन में क्यों यह सोच पड़ी है!

मुझको इस से मतलब बाबा!
देजा बाबा कुछ तो देजा!

तेरा जीवन मेरा जीवन,
तू भूखा तो मैं भी भूखा!
तू भिखमंगा, मैं भिखमंगा,
ना कुछ तेरा, न कुछ मेरा!

तेरा जब कुछ हो जाएगा,
मेरा प्याला खो जाएगा!

तब तक मेरी सुन ले बाबा!
देजा बाबा कुछ तो देजा!

अब्दुल मजीद भट्टी

अब्दुल मजीद भट्टी ने ३५ वर्ष की आयु तक कभी एक शेर तक न कहा। वे पहले किसी प्रायमरी स्कूल में अध्यापक थे, फिर कातिब बने और कई बर्ष तक खुशनवीसी करने के बाद कातिबों की मानसिक और सामाजिक दशा से असंतुष्ट होकर उन्होंने बच्चों के लिये एक पत्रिका निकाली। क्योंकि ख्याति प्राप्त कवि उसमें लिखने को तैयार न हुए, भट्टी साहब ने स्वयं ही उसमें सीधी सरल चीज़ें लिखनी आरंभ की, और सहसा एक दिन उनकी कविता अपनी पत्रिका के बंधन तोड़ कर चारों ओर बह निकली और उर्दू वालों ने भट्टी में एक निर्जीव कातिब ही नहीं, वरन् एक जानदार कवि भी पाया।

प्रकट है कि अपने जीवन में भट्टी ने बहुत कुछ सहा। यदि उस कटुता का प्रतिबिम्ब उसकी कविताओं और गीतों में आ गया है तो आश्चर्य नहीं।

भगवान

बैठा था आकाश पर,
तू आँखों से दूर,
लेकिन अपना मन था तेरी शरधा से भरपूर!

आँखों में परकाश था तेरा,
मन में था यह ज्ञान,
कर्म कुकर्म को देख रहा है तू मेरा भगवान!

तू मन्दिर में आन बिराजा,

पहन के हीरे मोती ,
द्वार धनुष की ओट में, आ गई तेरी ज्योती !

सेवक, दास, पुजारी, पुरोहित ,
पंडित औ' विद्वान ,
देने लगे यह ज्ञान ,—
उनके चरणों को छूने से मिलते हैं भगवान !

आरती-पूजा
रस लीलाएँ
देवदासियाँ गाएँ—

हरी हरी हर...हरी हरी हर...जय विष्णू भगवान !
तू है नाथ अनाथ का औ' निर्बल के प्राण !
जय तेरी भगवान !
राग रंग औ भेंट भोग के मोह ने तुझे रिझाया !
रस लीला के फेर में तुझ को ले आया इंसान !

ऐ मेरे भगवान !
तू मन्दिर में बैठ रहा है पहन के हीरे मोती ,
मैं हैरान हूँ इस पर तुझको उलझन क्यों नहीं होती ,
तोड़ फोड़ कर द्वार धनुष सब करदे एक समान ,
मन मन्दिर में बस न सके तो मत कहला भगवान !

अपमान

मान महत की माती रजनी , आती थी इठलाती ।
छम छम, छम छम करती ,

लहराती लचकाती,
लपक झपक के मन्दिर जाती,
ले पूजा के फूल!

मान महत की माती रजनी, आती थी इठलाती।
मान महत की माती रजनी,
पहुँची कृष्ण द्वारे!
आगे मत बढ़, ठहर बालिका,
देख महन्त पुकारे!
दूर बैठ कर देख मूर्ती,
वापस लेजा फूल।
नीच जात को मिल नहीं सकती प्रभु चरणन की धूल!
मान महत की माती रजनी, सह गई यह अपमान।
गिर गई पूजा की सामग्री छूटे उस के प्राण!
प्रभु,
यह किस का है अपमान!
ऊँच नीच के बंधन से कब छूटेगा इंसान!

मन की जोत

देखें लोग आकाश पै सूरज, सूरज का परकाश,
जीवन जोत जगाए!
कली कली में रंग भरे औ' सुन्दर फूल खिलाए,
दुनिया को महकाए!
मैं देखूं तो आय नज़र वह मैला औ' बे रूप.
जान जलाए धूप!

देखें लोग आकाश पै चाँद, औ' चाँद की जीवन जोत,
जो सुख रस बरसाए !
मन में भर दे नयी उमंगें,
जी सब का लहराए !
हर शै नाचे गाए !

मैं देखूं तो आग नज़र वह फीका और उदास,
बैठी जाए आस !
देखें लोग आकाश पै तारे हँसते औ' मुस्काते,
जी सब का बहलाते !
जगमग जगमग जगमग करते,
अपने पास बुलाते !

मैं देखूं तो टीन के टुकड़े, इक दूजे से दूर,
बिखरे हुए बेनूर !
अपने मन की जोत है दुनिया,
दुनिया के सब खेल !
मेरा मन मुफ़लिस[1] कर दिया है,
बिन बत्ती, बिन तेल !

आज और कल

भूखी आंखें कल को देखें,
झूठी आस लगाए !
आने वाली कल कब आकर आज की भूख मिटाए !

---

[1]ग़रीब ।

आने वाली कल पै भरोसा,
कब आए, क्या लाए ?
बीती कल ?
बीती कल के दीप की लौ कब आज की जोत जगाए ?

माथा छल के,
छाया ढलके,
लौट के फिर नहीं आए!
आज की भूख हो आज का रोना,
आज का राग सुहाग!
झूठ कपट से,

लाग लपट से,
आज के दीप जलाओ!
आज के मंगल गाओ!
बीती कल के दीप की लो अब अपनी जोत जगाए!
आने वाली कल पै भरोसा,
कब आए——क्या लाए!

अनोखा सपना

देखा एक अनोखा सपना!
अपना घर भी घर नहीं अपना!
गूंजी इक झंकार!
डोल गया संसार!
फिर कुछ अँध्यारा सा छाया!
देख रही थी जलती काया!
सहमे सहमे साये साये,

दुख के बादल छाये छाये ।
जलती हुई अरमान चिताएँ,
भूखे बच्चे बेबस माएँ ।

घबराई घबराई जवानी,
चलती फिरती दर्द कहानी !
जी चाहा इस घर को जलादूं,
जग में ऐसी आग लगादूं ।

गूंजे एक पुकार !
डोल गया संसार !
देखा एक अनोखा सपना !
अपना घर भी घर नहीं अपना !

जीवन उलझन

झुन झुन........झुन झुन... .....झुन झुन.........झुन झुन
बन गई अपने जीवन की धुन,
प्रीत की रानी आई,
मन की इक इक आशा जागी ले ले कर अँगड़ाई !
प्रीत की रानी आई,
आशाओं के दीप जलाकर,
अपनी प्यारी छब दिखलाकर,
इक थाली में फूल सजाकर,
ओट में [illegible] मुस्काई !
प्रीत की रानी आई !
इतने में इक मन का राजा आया मुकुट सजाए,

मन मन्दिर के दीप जलाए, प्रीत की जोत जगाए !
प्रीत की रानी बोली—राघे छम छम करते आओ !
इन फूलों से माला गूंथो ! राजा को पहनाओ !
जीवन-जोत जगाओ।
छम से आगे बढ़ कर ज्योंही गिनने लगी मैं फूल !
मन मन्दिर के दीप बुझे, जाने कुछ हो गई भूल !
प्रीत की रानी...... !
मन के राजा...... !
लौट के फिर नहीं आए !
इस जीवन में कौन अब आकर मन के दीप जलाए !
जीवन उलझन, अब है यही धुन !
झुन झुन........झुन झुन........झुन झुन........झुन झुन

जीवन आशा

इक इक करके डूब गए जब देस गगन के तारे !
सो गए भाग हमारे !
फैल गया चहुँ ओर अँधेरा ऐसी घटाएँ छाईं,
मग भूली, डग डोल गए औ' ओझल हो गई ठोर !
जागे चोर !
जीवन जोत को अँध्यारे ने ऐसी दी शह मात !
छा गई काली रात !
जगत पर छा गई काली रात !
आशाओं के इस मरघट पर दीप जगा इक न्यारा !
जागा भाग हमारा !

पग सूझे, डग सम्हल गए, फिर सामने आ गई ढोर !
भागे चोर !

इस दीपक ने अँध्यारे में जीवन जोत जगाई !
आशा जीवन जीवन आशा सच्ची रीत बताई !
अब यही रीत चले———
दीप से दीप जले————

जीवन गीत

आँखों में काजल रे माथे पै बिंदिया ,
मन में था मनहर गीत !
मैं ने देखी पड़ोसिन की चुड़ियां रे !
मुझे भूल गया मेरा गीत !

मेरे बालम ने बनवादी चूड़ियाँ रे !
बन्नी पहनेगी, खुश होगी, गाएगी !—
आएगी जीवन में जीत !
मैंने देखा पड़ोसिन का बंगला बना !

मुझे भूल गया मेरा गीत !
मेरे बालम ने बंगला भी बनवा दिया !
उस में टहलूंगी, घूमूंगी, गाऊँगी ,
जागेगी प्रीत की रीत !

मैंने देखा पड़ोसिन की मोटर खड़ी !
मुझे भूल गया मेरा मीत !
गई यूंही उमरिया बीत !
मुझे भूला रहा मेरा गीत !

आँखों में काजल रे माथे पै बिंदिया !
जीवन की जीत मेरे जीवन का गीत !

अँखियां रंग में

अंखियां डूबी रंग में ,
मन में भड़की आग !

इक जीवन पर छागई दो नयनो की लाग !

पल में आशा जी उठे ,
मन के दीप जलाए ।

इक पल में अँधियारा छाए आशा डूबी जाए !

नयनो की इस लाग को ,
जग कहता है प्रीत ।

इक पल हँसना, इक पल रोना, जीना मरना रीत !

दो प्रेमी इक रंग में ,
दो क़ालिब . क जान !

दीपक रूपी एक है एक पतंग समान ।

अपनी लाग में दीप जले ,
और अपना आप जलाए ।

अपनी लगन में जले पतंगा, आग से आग बुझाए !

अखियां डूबी रंग में मन में भड़ की आग !
इक जीवन पर छा गई दो नयनों की लाग !

नयनन सागर छलके

नयनन सागर छलके ;
फिर जल दीपक झलके !
अपने कन्हैया ,
मन में बसैया !

उनमें आन बराजे !
प्रीत की बंसी बाजे !
चरणों में इक देवादासी सुन्दर श्याम पुकारे
बैठी प्रेम सहारे !

ये तारे भी टूट न जाएँ ,
ये जल-मन्दिर फूट न जाएँ !
नयनन सागर छलके ,
फिर जल दीपक झलके !

विविध

कुछ ऐसे श्रेष्ठ कवि भी उर्दू में हैं जिन्होंने चाहे गीत अधिक न लिखे हों फिर भी उन की कविता में अनायास ही यह धारा बह निकली है और उन की कुछ कविताएं गीतों के बहुत समीप आ गई हैं। फिर ऐसे भी कवि हैं जिन्होंने एकदो सुंदर गीत अवश्य लिखे हैं और उन की सुंदरता के कारण उन्हें देने का लोभ संवरण नहीं किया जा सकता।

राष्ट्रीय गान

भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है,
हर रुत, हर इक मौसम इस का, कैसा प्यारा-प्यारा है!
कैसा सुहाना, कैसा सुंदर, प्यारा देश हमारा है!
दुख में, सुख में, हर हालत में, भारत दिल का सहारा है।
भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है!

सारे जग के पहाड़ों में वे, मिस्ल[1] पहाड़ हिमाला है,
यह परबत सब से ऊँचा है, यह परबत सब से निराला है,
भारत की रक्षा करता है यह; भारत का रखवाला है,
लाखों चश्मे बहते इस में, लाखों नदियोंवाला है,
भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है!

गंगाजी की प्यारी लहरें गीत सुनाती जाती हैं,
सदियों की तहज़ीब[2] हमारी याद दिलाती जाती हैं,

---

[1]अद्वितीय। [2]सभ्यता।

भारत के गुलज़ारों[1] को सरसब्ज़[2] बनाती जाती हैं,
खेतों को हरियाली देती, फूल खिलाती जाती हैं,
भारत प्यारा देश हमारा, सब देशों से न्यारा है।

हरे-भरे हैं खेत हमारे, दुनिया को अन[3] देते हैं,
चाँदी-सोने की कानों से हम जग को धन देते हैं,
प्रेम के प्यारे फूल की खुशबू गुलशन-गुलशन[4] देते हैं,
अमनों-अमां[5] की नेमत[6] सब को भरभर दामन देते हैं,
भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है।

कृष्ण की बंसी ने फूँकी है रूह हमारी जानों में,
गौतम की आवाज़ बसी है, महलों में, मैदानों में,
चिश्ती ने जो दी थी मय, वह अब तक है पैमानों में,
नानक की तालीम अभी तक गूँज रही है कानों में,
भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है

मज़हब हो कुछ, हिंदी हैं हम, सारे भाई-भाई हैं,
हिंदू हैं या मुस्लिम हैं या सिख हैं या ईसाई हैं,
प्रेम ने सब का एक किया है प्रेम के सब शैदाई[7] हैं,
भारत नाम के आशिक़ हैं हम भारत के सौदाई[8] हैं,
भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है।

हामिद अल्लाह 'अफ़सर'

सीता और तोता

हुई क्या वह बहार ऐ आर्यावरत[9]

---

[1]बाग़ों। [2]उर्वर। [3]अन्न। [4]बाग़। [5]शांति। [6]विभूति। [7]प्रेमी। [8]पागल। [9]आर्यावर्त।

चमन की ज़िंदगी थे जिस के अनफ़ास[1] !
वह रंगारंग फुलवाड़ी कहाँ है,
दिमागों में है अब तक जिस की बू-बास !
वह आज़ादी किधर है जिस से कट कर,
न आई कोई भी तुझ को हवा रास !
क़फ़स[2] में बंद होती थी जो तूती[3],
तो सीता को दिया जाता था बनवास !

यह ताना भी सुना तू ने कि तुझ को,
कभी भी था न आज़ादी का इहसास[4] !

मौ० ज़फ़र अली ख़ाँ

आओ सहेली झूला झूलें

पुरवा सनका बादल छाए, भूरे काले घिर कर आए,
अमृत जल भर-भर के लाए, बरखा रुत की इस बरखा में। आओ सहेली०

उठी हैं पुरशोर घटाएं, काली-काली घोर घटाएं,
सावन की घनघोर घटाएं, सावन की घनघोर घटाएं ! आओ सहेली०

बरखा रुत की शान निराली, पत्ते-पत्ते पर हरियाली,
डाली-डाली है मतवाली, इस रुत की मख़्मूर फ़िज़ा में। आओ सहेली०

झूलें और पकवान बनाएं, आमों का नौरोज़ मनाएं,
खाते जाएं गाते जाएं, झड़ी लगी है इस बरखा में। आओ सहेली०

मौ० 'ताजवर'

---

[1]रहने वाले। [2]पिंजड़ा। [3]पक्षी, तोता। [4]अनुभूति। [5]मस्त।

ऐ ख़ूबसूरती

ऐ ख़ूबसूरती ! क्या बात है तेरी ?
यह मख़मली पहाड़, यह मोहना उजाड़,
फूलों की रेल-पेल, चिड़ियों की कूद-खेल,
यह धूप, यह हवा, यह ख़ुल्द[1] की फ़िज़ा[2],
सब शाम है तेरी, ऐ ख़ूबसूरती !
नन्ही फुहार ने, मीठी-सी मार ने,
दिल को जगा दिया, कैसा मज़ा दिया !
इस छेड़-छाड़ में, बूँदों की आड़ में,
तू थी छुपी हुई, ऐ ख़ूबसूरती !
जल्वा मुझे दिखा, दिल में मेरे समा,
हर चीज़ में झलक, गहराइयों तलक,
दुनिया बना इक और, जिस का नया हो तौर[3],
ऐ मेरी नित नई, ऐ ख़ूबसूरती !

मौ० बशीर अहमद

हँस देंगे और गाएँगे !

दूर किसी इक गाओं में, ठंडी-ठंडी छाओं में,
गाना अपना गाएंगे ! गाएंगे हम गाएंगे !
नन्हे-नन्हे फूलों में, हलके-हलके झूलों में,
क्या-क्या लुत्फ़ उठाएंगे ! झूलेंगे और गाएँगे !
फिर इक प्यारी सूरत को, फिर इक मोहनी मूरत को,
मन का गीत सुनाएंगे ! नाचेंगे और गाएँगे !

---

[1]स्वर्ग। [2]वातावरण, बहार। [3]रूप।

दुनिया आनी-जानी है, हम ने भी पर ठानी है—
जो खोया है पाएँगे ! पाएंगे और गाएंगे !
औरों का हम देख के रंग, आज रंग और कल के ढंग,
ग़ुस्से में जब आएंगे, हंस देंगें और गाएंगे,
जन्नत को हम क्या जानें ? दोज़ख को हम क्या मानें ?
दुख में भी हम गाएँगे ? जीकर यों दिखलाएँगे ?

मो० बशीर अहमद

पपीहे से

रागिनी 'पीहू' की सिखलाई है किस ने तुझ को ?
तरज़ यह आगई किस तरह पपीहे तुझ को ?
रैन बरखा की यह तारीक[1] यह हू का आलम[2],
किस की याद आ गई इस वक़्त न जाने तुझ को ?
देख कर इस की चमक जोश पै क्यों आता है ?
दम-बदम करती है क्या बर्क़[3] इशारे तुझ को ?
बोल उठता है जो यूं सर्द हवा पाते ही—
मुयदा[4] क्या देते हैं पुरवा के यह झोंके तुझ को ?
किस को रह-रह के सुनाता है 'रसीली तानें' ?
किस को इस वक़्त नज़र आते हैं जलवे तुझ को ?
हाय क्या हिज्र में डूबी हुई लय है तेरी ?
मेरे सीने से कोई आके लगा दे तुझ को !
दिल मेरा क्यों न भर आए तेरी पी-पी सुन कर,
मुबतला[5] मैं भी हूं गर इश्क़ है प्यारे तुझ को,

---

[1]अँधेरी। [2]निस्तब्धता। [3]बिजली। [4]सुसमाचार। [5]फँसा हुआ।

एक बेदार[1] हूं मैं, जाग रहा है इक तू,
लोटते मुझ को गुज़रती, है तड़पते तुझ को,
फिर भी है फ़र्क़[2] बहुत हाल में हम दोनों के,
कि मुझे ज़ब्त[3] अता[4] हो गया, नाला तुझ को!
महवे-फ़रियाद[5] फ़क़त रात को तू होता है,
मेरे दिल पै है वह बिपता कि सदा रोता है!

सग्रादत हुसैन 'मुजीब'

फिर क्या तेरा मेरा रे

तेरे दर की धूल में जाने क्या पाया है भिखारी ने?
दुनिया छूटी पर नहीं छूटा तेरी गली का फेरा रे।
प्रीत बुरी है, या अच्छी है, जो कुछ भी है मेरी है,
अब तो प्यारे आन बसाया मन में प्रेम ने डेरा रे!
मेरे दिल की दुनिया प्यारे तेरे दिल की दुनिया है,
तू मेरा है, मैं तेरा हूँ, फिर क्या तेरा मेरा रे?
प्रेम के बंधन में फँसने से कितने बंधन टूटे हैं?
यह मैं जानूं, या वह जाने, जिस को प्रेम ने घेरा रे!
जब तुम सपने में भी न आओ, प्यारे फिर क्यों नींद आए?
बिरह का दीपक जब नहीं बुझता, फिर कैसे हो सवेरा रे?

'रविश' सद्दीक़ी

सरमायादारी

दौलत ने कैसी शोरिश[6] उठाई? क्या बादशाही औ' क्या गदाई[7]।
भूखों की रोटी हथिया के बंदा, करता है बंदों पर क्यों खुदाई?

[1]जाग्रत। [2]अंतर। [3]संयम। [4]प्रदान। [5]उपालंभ-रत। [6]उपद्रव। [7]फ़क़ीरी

शाही गदाई, मीरी फ़क़ीरी, जब उठ गए यह पर्दे रयाई[1]—
यह भी है इंसां, वह भी है इंसा, वह इस का भाई, यह उस का भाई!

मौ० हामिद अली खां

बली बीबी की फ़रियाद

१

बीबी

पड़ते ही सो जाती हूं।
भारी सर तकिये पर रख कर,
निंदिया-पुर में खो जती हूं।

मेरा ख़ुसर[1] ग़ुस्से[2] में भर कर,
फिरता है अंदर और बाहर,

ताल

धब धब धब, गाली पर गाली।
सो नहीं सकती मैं बेचारी!

ख़ुसर

उठ री उठ ओ काहिल लड़की,
फूहड़, मरियल, नींद की माती,
उठ री उठ, सुस्ती की कान!

२

बीबी

पड़ते ही सो जाती हूं।
भारी सर तकिये पर रख कर,

---

१ झूठे। २श्वसुर।

निंदिया-पुर में खो जाती हूं ।

सास मेरी तैहे में जल कर,

फिरती है अंदर और बाहर,

ताल

धन धन धन, गाली पर गाली ।

सो नहीं सकती मैं बेचारी !

सास

उठ री उठ ओ काहिल लड़की,

उठ री सटल्लो नींद की माती,

फूहड़, सुस्त, मुई, हैवान !

३

बीवी

पड़ते ही सो जाती हूं ।

भागी सिर तकिये पर रख कर,

निंदिया पुर में खो जाती हूँ ।

हौले-हौले बालम मेरा,

चुपके–चुपके हमदम मेरा,

आते–जाते अंदर बाहर,

कहता है मुझे सोते पाकर—

पति

"सो ले, सो ले, मेरी प्यारी !

सो ले, सो ले, ओ बेचारी !

यह दिन औ' दुनिया का धंदा !

यह सिन और शादी का फंदा !

मेरी बन्नो ! मेरी जान !"

मौ० हामिद अली खां

एक गीत

बाग़ों में पड़े झूले,
तुम भूल गए हम को, हम तुम को नहीं भूले!

सावन का महीना है,
साजन से जुदा होकर, जीना कोई जीना है!

यह रक़्स सितारों का,
अफ़साना कभी सुन लो, तक़दीर के मारों का!

आख़िर यही होना था,
यों ही तुम्हें हँसना था, यों ही हमें रोना था!

रावी का किनारा है,
हर मौज के ओठों पर, अफ़साना तुम्हारा है!

अब और न तड़पाओ,
या हम को बुला भेजो, या आप चले आओ!

मौ० चिराग़हसन 'हसरत'

दुखी कवि

सेहन में नरगिस के इक सूखे हुए पौदे के पास,
एक तितली, धूप में जिसका चमकता था लिबास,
उड़ते-उड़ते एक लम्हे[1] के लिए आकर रुकी,
और फिर कुछ सोच कर सहरा[2] की जानिब[3] उड़ गई!

---

[1] क्षण। [2] मरुस्थल। [3] तरफ़।

यों ही आती है मेरे उजड़े हुए दिल तक ख़ुशी।
मेरे ग़म से ख़ौफ़ खाती, काँपती डरती हुई !

राजा महदी अली ख़ां

सुन ले मेरा गीत

सुन ले मेरा गीत ! प्यारी, सुन ले मेरा गीत !
प्रेम यह मुझको रास न आया, तेरी क़सम बेहद पछताया,
करके तुझ से प्रीत !

ख़ाक हुए हम रोते रोते, प्रेम में व्याकुल होते होते,
प्रीत की है यह रीत।

प्रेम में रोना ही होता है, जीवन खोना ही होता है,
हार हो या हो जीत !

'बहज़ाद' लखनवी

प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना

प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना, सावन की भरी बरसातों में,
आजाए इश्क़ जवानी पर, वह रस हो प्रेम की बातों में,
दर्द उठे मीठा-मीठा सा, दिल कसके काली रातों में,
प्रीतम कोई ऐसा गीता सुना !
जिस गीत की मीठी तानों से, इक प्रेम की गंगा फूट पड़े,
आँखों से लहू हो जाय रवां[1] अश्कों[2] का दरिया फूट पड़े,

---

[1]जारी। [2]आँसुओं।

उजड़ी हुई दिल की महफ़िल[१] में इक नूर की दुनिया फूट पड़े,
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना !

कुहसारों[२] पर बादल छाएं, इशरत[३] पै ज़माना मायल[४] हो,
फिर खाए चोट मुहब्बत की, फिर दुनिया का दिल घायल हो,
हर भोला-भाला शरमीला उलफ़त के दर का सायल[५] हो,
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना !

हो सोज़[६] वही और साज़[७] वही, वह प्रीत के दिन फिर आजाएं,
बरखा हो, प्यार की बातें हों, इस रीत के दिन फिर आजाएं,
फिर दुखियारों की हार न हो औ' जीत के दिन फिर आजाएं,
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना !

सिराजुद्दीन 'ज़फ़र'

सावन

वह पर्वत पर है इक बदली का साया, अँधेरा जंगलों में सनसनाया,
पपीहा 'पीहू' 'पीहू' गुनगुनाया, हवा ने झाड़ियों में गीत गाया,
वे बगलों ने भी अपने पर सँवारे !
वे मक्खन के खिलौने प्यारे-प्यारे !

वे वादी[८] में अबाबीलों की डारें, वे बल खाती हुई पानी की धारें,
वे भोले-भोले बच्चों की कतारें, वे झूलों पर मल्हारों की पुकारें !
वह इक नन्ही फिसल कर रो रही है !
चुनरिया बेदिली से धो रही है !

धनक[९] ने यक-ब-यक चिल्ला चढ़ाया, पलट दी आन में आलम[१०] की काया,

---

१सभा। २पहाड़ों। ३आराम। ४झुके। ५याचक। ६दर्द। ७वाद्ययंत्र।
८घाटी। ९इंद्रधनुष। १०संसार।

फटी बदली औ' सूरज मुस्कराया, छुआ चाँदी को औ' सोना बनाया,
हवा ने धीमे-धीमे गीत गाए।
पहाड़ों के पड़े झीलों में साये।

वह इक चरवाहे ने मुरली बजाई, वह नज़्ज़ारों को अँगड़ाई-सी आई,
यह ख़ुनकी[1] और यह आतश-नवाई[2], नया चोला बदलती है ख़ुदाई,
ठिठर कर बकरियां थर्रा रही हैं।
जुगाली ही है, मन बहला रही हैं।

यह सब्ज़ा ! औ' यह नालों की रवानी, बफर कर, झाग बन जाता है पानी,
यह भीगे-भीगे पौदों की जवानी, मुझे डसती हैं ये घड़ियां सुहानी,
ज़मीं पर बारिशें क्या हो रही हैं ?
मेरी क़िस्मत पै हूरें[3] रो रही हैं !

वे अब तक क्यों न आए, क्यों न आए ! वे आए तो मुझे सावन लुभाए,
मुझे वे, औ' उन्हें परदेस भाए, कहां तक राह देखूं हाय, हाय
उड़े जाते हैं वे बादल बरस कर,
मेरे दिल अब न रो, कंबख़्त, बस कर !

अहमद नदीम क़ासिमी

भोर आई

अँध्यारे का दर्पण टूटा, पूरब ने पौ बरसाई,
अँगारे का झूमर पहने, ऊषा ने ली अँगड़ाई !
जंगल महके पंछी चहके, बहकी बहकी पुरवाई !
भोर आई
रुकी रुकी सी, झुकी झुकी सी, दुखी दुखी सी आशाएँ,
मचल मचल के, उछल उछल के, गगन झरोखे छू आएं !

---

[1] शीतलता। [2] अग्निवर्षा। [3] परियां।

भोर आई

मन में सपनों की महारानी, मन ही मन में इतराई !
धुआंधार पच्छिम की बस्ती, धड़ धड़ पूरब देस जले,
सूरज देवता घात लगाए, रात की देवी हाथ मले,
किरणों की गोपी कोहरे में, कांप कांप के चिल्लाई !

भोर आई !

अहमद नदीम कासिमी

आहू[1]

माथे पै बिंदी, आँख में जादू, ओठों पै बिजली, गिरती थी हरसू[2] !
चाल लचकती, बात बहकती, जैसे किसी ने पीली हो दारू[3]।
अँखड़ियां ऐसी, जिन में रक्सां—छिन मे राधा छिन में राहू।
ऐसी भड़क थी खल्क[4] थी हैरां, रेल पै आया, कहाँ से आहू !

'यलदरम'

मैं तुझ से मुहब्बत करता हूं

मैं तुझ से मुहब्बत करता हूँ।
ओ मुझ से खफ़ा रहनेवाले ! ओ मुझ को बुरा कहने वाले !
मैं तुझ से मुहब्बत करता हूं, मैं तेरे नाम पै मरता हूँ।
मैं तेरा अदना[5] बंदा हूं, राज़ी-ब-रज़ा[6] रहनेवाला।
मैं तेरा अदना बंदा हूं, सरगर्मे वफ़ा[7] रहनेवाला।
मैं तेरा अदना बंदा हूं, क़दमो में गिरा रहनेवाला।
तूँ मुझ से खफ़ा क्यों रहता है, ओ मुझ से खफ़ा रहनेवाले !
तू मुझ को बुरा क्यों कहता है, ओ मुझ को बुरा कहने वाले ?

---

[1]मृगछौना। [2]सब ओर। [3]मदिरा। [4]जनता। [5]गरीब। [6]तेरी खुशी खुश रहनेवाला। [7]सदैव तेरा हुक्म माननेवाला।

मैं तुझ से मुहब्बत करता हूँ ! मैं तेरे नाम पै मरता हूँ !

'मजीद' मलिक

आग़ाज़[1]

मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं ! मगर ऐ हसीनाए नाज़नीं[2]—
तू हो मुझ से दूर अगर कभी, तुझे ढूँढती हो नज़र कभी,
तो जिगर[3] में उठता है दर्द-सा, मेरा रंग रहता है ज़र्द-सा।
मगर ऐ हसीनाए नाज़नीं, मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं !

मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं, मगर ऐ हसीनाए नाज़नीं—
तू अगर हो मजमए आम[4] में, किसी खेल में किसी काम में,
तो मैं छिप के दूर ही दूर से, तुझे देखता हूं ग़रूर[5] से।
मगर ऐ हसीनाए नाज़नीं, मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं !

तू कहे यह मुझ से अगर कभी, मुझे ला दो लालो-गुहर[6] कभी,
तो मैं दूर-दूर की सोच लूं, मैं फ़लक के तारे भी नोच लूं,
यह सबूत शौक़े-कमाल[7] दूं, तेरे पाओं में उन्हें डाल दूं।
मगर ऐ हसीनाए नाज़नीं, मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं !

'मजीद' मलिक

कौन किसी का मीत ?

कौन किसी का मीत ?
सावन की तूफ़ानी रातें, कैफ़भरी[8] मस्तानी रातें,
रातें, वह दीवानी रातें, बीत गई हैं बीत !

---

[1]आरंभ। [2]ऐ सुंदरी तरुणी। [3]हृदय। [4]जनता की भीड़। [5]गर्व। [6]हीरे-मोती। [7]पक्के प्रेम का प्रमाण। [8]मस्ती भरी।

कोई सितम-ईजाद नहीं है, दाद नहीं, फ़रयाद नहीं है,
उन को कुछ भी याद नहीं है, मुँह देखे की प्रीत!
बांके बालम के बलिहारी, उस की चितवन की छबि न्यारी,
मैंने जीती बाज़ी हारी, हार भी उनकी जीत।
मन मूरख यह भूल रहा है, काँटों ही पर फूल रहा है,
गाता है और झूल रहा है, आशाओं के गीत!

सोहनलाल, 'साहिर'

वहीं ले चल मेरा चर्खा

मुझे मा-बाप के घर में वह इतमीनान[1] हासिल[2] था,
कि दुनिया भर की उम्मीदों का गहवारा[3] मेरा दिल था।
हुई हालत मगर बिल्कुल वही सुसराल में आकर,
फँसे जैसे कोई आज़ाद पंछी जाल में आकर।
मुहल्ले भर की सारी औरतें मुझ को बनाती हैं,
मैं उन का मुँह चिढ़ाती हूं, वह मेरा मुँह चिढ़ाती हैं।
सहे जाते नहीं अब मुझ से ताने सास ननदों के,
क़यामत है रहूँ किस तरह दिन भर पास ननदों के!
वहीं ले चल मेरा चर्खा जहां चलते हैं हल तेरे!
तेरी फ़ुरक़त[4] की मारी तुझ को हरदम याद करती है।
मुझे ले चल कि मेरी आत्मा फ़रयाद करती है!
न आँसू आएँगे रुख़[5] पर, न घबराएगा दिल मेरा,
कि तेरे साथ रहने से बहल जाएगा दिल मेरा
यह माना हैं बहुत दिलचस्प सुबहो-शाम के जल्वे,

---

[1]शांति। [2]प्राप्त। [3]घर। [4]विरह। [5]मुख।

रहे तुम आँख से ओझल, तो फिर किस काम के जल्वे !
तुम्हारे साथ रह कर अपना ग़म सब भूल जाऊँगी,
तुम्हें गाता जो देखूँगी तो ख़ुद भी साथ गाऊँगी।
मैं अपने दर्द से जंगल के वीराने को भर दूँगी,
मैं अपने गीत से सारी फ़िज़ा आबाद कर दूँगी
मेरी ख्वाब आफ़री[1] तानों में खो जाएँगे पंछी भी,
दरख़्तों[2] की तरह मबहूत[3] हो जाएँगे पंछी भी।
वही रौनक़ वही सामान आएगा नज़र मुझ को,
मैं हूँगी साथ तो वह बन भी हो जाएगा घर मुझ को।

वहीं ले चल मेरा चर्ख़ा, जहां चलते हैं हल तेरे !

'फ़ाखिर' हरियानवी

चाह का भेद

से मैं कैसे भुलाऊँ सखी, मेरे जी को जो आके लुभा ही गए !
मेरे मन में वह प्रेम बसा ही गए, मुझे प्रीत का रोग लगा ही गए !
किए मैंने हज़ार-हज़ार जतन, कि बचा रहे प्रीत की आग से मन,
मेरे मन में उभार के अपनी लगन, वह लगाव की आग लगा ही गए!
बड़े सुख से यह बीते थे चौदह बरस, कभी मैं ने चखा न था प्रेम का रस,
मेरे नयनों को श्याम दिखा के दरस, मेरे दिल में वह चाह बसा ही गए !
कभी सपनों की छाओं में सोई न थी, कभी भूल के दुख से मैं रोई न थी,
मुझे प्रेम के सपने दिखा ही गए, मुझे प्रेम के दुख से रुला ही गए !
रहें रात की रात सिधार गए, मुझे सपना समझ के बिसार गए,
मैं थी हार, गले से उतार गए, मैं दिया थी जिसे वह बुझा ही गए !

---

[1] नींद बुलाने वाली। [2] वृक्षों। [3] मुग्ध।

सखि कोयलें 'सावनी' गाएँगी फिर, नई कलियां छावनी छाएँगी फिर,
मेरी चैन की रातें न आएँगी फिर, जिन्हें नैन के नीर मिटा ही गए!
मेरे जी में थी बात छिपा के रखूं, सखि चाह को मन में दबा के रखूं,
उन्हें देख के आँसू जो आही गए, मेरी चाह का भेद बता ही गए!

'अज्ञात'

ग्वालन

इस की आँख में प्रीत का रस है, इस के मन में प्रेम की लहरें।
इस के सिर पर दूध की मटकी, इस के घर में दूध की नहरें।
हँसमुख सुंदर, छैल-छबीली, सब को दूध पिलाती है यह।
कहती है जब 'माखन ले लो!', गोकुल याद दिलाती है यह!
खेले थे परवान चढ़े थे[१], इस के घर में श्याम कन्हैया।
दुनिया थी यह इक भवसागर, खेती थी यह इस की नैया!
कितनी पाक और कितनी सुन्दर! कृष्ण मुरारी इस ने पाले।
प्यार से उन को कहती थी यह, 'आजा प्यारे माखन वाले'!
पालती है यह अब भी हम को, अब भी इस की रीत वही है।
देती है यह अब भी माखन, प्रेम वही है, प्रीत वही है।
आओ बढ़ कर इस से पूछें— क्योंरी ग्वालन, श्याम कहां हैं?
उन बिन भारत भर है सूना, उस के दिल आराम कहां हैं?
वह जो मिलें तो उन से कहना, श्याम मुरारी फिर से आओ,
बोल करो फिर बाला अपना, भारत के फिर भाग जगाओ!

मनोहरलाल 'राहत'

---

१ बड़े हुए थे।

कमल से

ऐ कमल, ऐ जल-परी, ऐ झील के तारों की जोत !
तेरे कारण प्रीत-सागर में खुली गंगा की स्रोत।
धारता है रूप कुछ ऐसे तू ऐ नाज़ुक कमल,
मोहनी मूरत पै तेरी आँख जाती है फिसल।
गुदगुदा देता है, तुझ को जिस समय कोयल की कूक,
मुस्कराहट से बदलती है तिरे हिरदे की हूक।
तू कहां, इक हंस है पानी पै पर खोले हुए।
चाँद पनघट पर उतर आया है पर तोले हुए।
या कोई बगला खड़ा है सर उठाए घात में,
या इकट्ठा हो गया है फेन चौड़े पात में,
या यह चाँदी का कटोरा है 'कटोरा-ताल' में,
या यह शीशे का दिया जलता है 'चौमुख' ताल में,
या किसी देवी की सुमिरन गिर पड़ी तालाब में,
या गड़ी है कोई फूलों की छड़ी तालाब में,
या खुला है फूल की सूरत में भादों का भरम,
या लिया है नूर के तड़के ने दरिया पर जनम,

'शाद' आर्फ़ी

सपने में क्यों आते हो ?

चुपके-चुपके ताक लगाए,
साँस की आहट तक ना आए,
नाग समान कई बल खाए,
रैन अँधेरी, हू का आलम,
कैसे निडर हो, सुंदर बालम !

ऐसे में जब आते हो,
जी को धड़का जाते हो।
ऊपर वाला राह बताए,
राह में वह ठोकर ना खाए!
बिगड़ी बात कहीं बन जाए,
आए सोए भाग जगाए!
वैरी है संसार तुम्हारा,
मैं हारी जब मन को हारा।
सपने में क्यों आते हो?
नींद उड़ा ले जाते हो!

लतीफ़ अनवर

ओ मेरे बचपन की कश्ती

ओ मेरे बचपन की कश्ती, इन काली-काली रातों में,
किस जानिब[1] भागी जाती है, इन तूफ़ानी बरसातों में!
दिल में उलफ़त, आँखों में चमक, नज़रों में हिजाब[2] आने को है,
भँवरों से निकल, लहरों से सभँल, तूफ़ाने शबाब[3] आने को है!
शहरों में डाकू बसते हैं, ले चल मुझ को सहराओं में,
ओ मेरी जवानी, ले भी चल, जंगल की मस्त हवाओं में!
आ उस जा[4] भाग चलें जिस जा, यह जिस्म[5] लुटाए जाते हैं,
जिस जा आज़ादी की खातिर, सर भेंट चढ़ाए जाते हैं!
जहां जिन की नज़रें[6] चढ़ती हैं, आज़ादी के दरबारों में,
जिस जगह जवानी पलती है, तलवारों की झनकारों में!

'क़मर' जलालाबादी

---

[1]तरफ़। [2]लज्जा। [3]जवानी का तूफ़ान। [4]जगह। [5]शरीर। [6]भेंटें।

चंदा मामू

प्यारे चाँद चमकनेवाले, दुनिया भर को तकने वाले,
सब के सिर पर तेरा डेरा, सब से ऊँचा घर है तेरा।
तू जब अपनी ख़ास शान से, नीले-नीले आसमान से,
दूर उभरता दिया दिखाई, बोल उठी झट बुढ़िया माई—
'बेटा तेरा मामू आया'। मैं कहता हूं 'मामू कैसा'?
सब आते हैं यह नहीं आता, इंजन-गाड़ी यह नहीं लाता।
यह लो मेरी गेंद उछल कर, जा पहुँची है तारों के घर।
हाँ ऐ चाँद अब नीचे आना। दूध मलाई माखन खाना!
मेरे दिल का टुकड़ा बन जा! रूठा है चुपके से मन जा।
मेरी इन आँखों में रहना! कुछ भी करना, कुछ भी कहना!

खज़ानचंद 'वसीम'

फूल-फूल ऐ सरसों फूल!

आज फूल कल-परसों फूल, सदा सुहागिन बरसों फूल!
जोबन पाकर बन में फूल, तन से फूल औ' मन से फूल!
फूल-फूल ऐ सरसों फूल!
पगली कोयल के ये बोल, तेरे मेरे दिल के बोल,
चुपके-चुपके सुनती रह! सुन-सुन कर सिर धुनती रह!
फूल-फूल ऐ सरसों फूल!
मस्ती भरी हवाओं में, जग की धूप औ' छाओं में,
झूमे जा, लहराए जा, आँखों में मुस्काए जा!
फूल-फूल ऐ सरसों फूल!
फूल-फूल दीवानी भूल, पाकर नई जवानी फूल,
दुनिया की नज़रों से दूर, अनमैली आँखों से दूर,

फूल-फूल ऐ सरसों फूल !
ऐ वनवासी की जोगन, ओ री, पी की बैरागन !
जब तक तन में साँस रहे, पिया मिलन की आस रहे।
फूल-फूल ऐ सरसों फूल !
आज फूल कल-परसों फूल, सदा सुहागन बरसों फूल।
फूल-फूल ऐ सरसों फूल !

खज़ानचंद 'वसीम'

हठीले भँवरे

हठीले भँवरे मत गुंजार !
रूप-गंध-रस-कोमलता का दो दिन है संसार,
जीवन भर रोएगा जी को, दो दिन करके प्यार !
हठीले भँवरे मत गुंजार !
जो कलियां खिल कर मुरझाईं उन की ओर निहार !
आज कलंक हैं फुलवारी का कल थीं जो सिंगार !
हठीले भँवरे मत गुंजार !
प्रेम का मीठा राग लगा कर कैसी हाहाकार !
मन पापी है दुख का कारण, पापी मन को मार !
हठीले भँवरे मत गुंजार !
भूल न पतझड़ को ऐ पागल, मेरी ओर निहार !
प्रेम-बसंत के खंडहर पर करती हूं हाहाकार !
हठीले भँवरे मत गुंजार !
जिस की आस पै दुनिया छोड़ी छोड़ दिया घर-बार,
उस पापी ने ठोकर मारी करके आँखें चार !
हठीले भँवरे मत गुंजार !

बिहारीलाल, 'साबिर'

आग लगी रे आग

आग लगी रे आग राजमहल में आग, लगी रे !
मज़दूरों के ख़ू से बनी थी राजमहल की शान,
निर्दोषों के कंधों पर था उन सब का अभिमान !

जनता जाग उठी रे जाग !
आग लगी रे आग !

धनियों ने अन्याय किया था,
परजा का धन लूट लिया था,
दुखियारों का खून किया था,

एका करके टूट पड़े हैं ज़हरी काले नाग,
आज मचेगा अँध्यारे में हुल्लड़ और निराज,
कल का सूरज देखेगा धरती पर परजा राज !

जागे देश देश के भाग !
आग लगी रे आग !

राम प्रकाश 'अश्क'

मैं हूं शाम का राग

मैं हूँ शाम का राग सुलगे जो भी सुने !
दिन का उजाला है अब ज्वाला, रात अभी तक आई नहीं,
फैला धुँधलका हल्का हल्का—सुख इक पल का लाई नहीं।
गहरी सयाही छाई नहीं !
अँध्यारे में आग कौन अंगारे चुने !
डूबा सूरज, गई वह सज-धज चन्दरमाँ का सुख भी नहीं,
अभी रात का जीत पात का किसी बात का सुख भी नहीं।
दुख जो नहीं तो सुख भी नहीं !

कोई लगन है न लाग यह दुख लाख गुने !
कोई इशारा कोई इशारा, आए मुझे बेचैन करे,
आँसू छलके, आँख में छलके, रुक रुक ढलके बैन करे !
जलती शाम को रैन करे !
सोए रहे फिर भाग और मन सपने बुने !

जया जालंधरी

और न अब कुछ भाए

पुरवा सनके, बाग़ में आए, डाल डाल सहलाए,
झूम झूम कर फूल की इक इक पत्ती गिरती जाए,
घास के सीने पर लेकिन अब फूल ही रंग जमाए !
और न अब कुछ भाए !

इस दुनिया से दूर इक बस्ती बसाएँ, बीती बातें,
दिल की जलन मिटाएँ जब याद आएँ भीगी बरसातें,
बीती बातों का जादू ही सुख की बरखा लाए !
और न अब कुछ भाए !

जाग उठी हैं बैठे बैठे ध्यान की लाखों लहरें,
मन की झकोले खाती नाओं ठहरें, कहीं तो ठहरें,
अनहोनी को बरसों देखा होनी क्यों तरसाए !
और न अब कुछ भाए !

क़य्यूम नज़र

असफलता

निशि दिन दीप जलाए पगली, पाए घोर अँधेरा,
कौन कहे अब उसे, 'हठीली अन्त यही है तेरा' !

रैन की गोदी खाली करके चाँद सितारे भागे !
अँध्यारे हैं पीछे पीछे, ज्योती आगे आगे !
होते होते दो नयनों से ओझल हुआ सवेरा !

छाया घोर अँधेरा !
अन्त यही है तेरा !

दूर दूर तक एक उदासी, सड़ी बुसी इक छाया !
धरती से आकाश तक उड़ कर आशा ने क्या पाया !
चारों खूंट चली अँध्यारी चिन्ताओं ने घेरा !

छाया घोर अँधेरा !
अन्त यही है तेरा !

कौन चुने अब टूटे तारे जोत कहाँ से आए !
कौन गगन पर सेज बिछाए, फूल तो हैं मुरझाए !
कौन है इस नगरी में जो आकर करे बसेरा !

निसि दिन दीप जलाए पगली पाए घोर अँधेरा,
कौन कहे अब उसे, हठीली, अन्त यही है तेरा,

सुलताना 'क़मर'

दो हिन्दी गज़लें

(१)

करती है रह रह के इशारे,
मौत तुझे ओ मद-मतवारे !
मुझ दुखिया को इस नगरी में,
अपना कह कर कौन पुकारे !

बिछड़े तो फिर मिल न सके हम ,
जैसे दो नद्दी के किनारे।
डूब रही है जीवन-नौका ,
देख रहे हैं खेवनहारे।

प्रीतम रूठे, सोई क़िस्मत ,
टूटे यों जीवन के सहारे !
देख के इन नयनों के आँसू ,
रोते हैं आकाश में तारे।

कौन अलताफ़ किसी का जग में ,
बातों में मत आना प्यारे !

(२)

क्यों निस दिन आँख बरसती है।
नागिन सी मन को डसती है ?
मन हौले हौले रोता है ,
जब दुनिया मुझ पर हँसती है !

बसते हैं आँखों में आँसू ,
मन आशाओं की बस्ती है !
जाँ देकर उनकी याद मिली ,
इन दामों कितनी सस्ती है !

पी छिप कर बैठे हैं मन में ,
दर्शन को आँख तरसती है !
दुनिया अलत्ताफ़ जवानी है ,
फुलवारी बन कर हँसती है !

अलताफ़ मशहदी

प्रेम के बदरा आओ

प्रेम के बदरा आओ !

जीवन सागर सूख चला है प्रेम के बदरा आओ !
मुझ अबला बिपता मारी को व्यर्थ न अब तड़पाओ !
छा जाओ जो आए हो अब बिन बरसे मत जाओ !
बरस बरस के मेरे सूखे सागर को भर जाओ !
प्रेम के बदरा आओ !

प्रेम समीर के शीतल कोमल निर्मल झोंके आएँ,
मन उपवन के क्यारी क्यारी में घूमें इठलाएँ,
जीवन बगिया की मुरझाई कलियाँ फिर मुस्काएँ,
आशाओं के वृक्ष की सूखी टहनी को लहराओ !
प्रेम के बदरा आओ !

दुख सहती हूं मैं निसदिन, मुझ दुखिया को बहलाओ,
रिमझिम-रिमझिम तान छेड़ के प्रेम की तान उड़ाओ,
सूखी आशाओं की कलियां तृष्णा तुरत बुझाओ,
घुमड़ घुमड़ के आओ जल्दी अमृत जल बरसाओ !
प्रेम के बदरा आओ !

सायिल अनेठवी

भाग गईं जो मेरी ख़ुशियां

भाग गईं जो मेरी ख़ुशियां !

बादल के सीने में झमकीं,
तारों की आखों में चमकीं,
चाँद के माथे पर जा दमकीं,

भाग गईं जो मेरी ख़ुशियां!

कलियों के होटों पर झलकीं,
या उनकी आँखों से छलकीं,
पलकों पर नाचीं फिर ढलकीं,

भाग गईं जो मेरी ख़ुशियां!

चंचल लहरों में वे लहकीं,
फूलों के गालों में महकीं,
बन नन्ही चिड़ियां वे चहकीं,

भाग गईं जो मेरी ख़ुशियां!

मसऊद हसन

जोगिन फिरे उदास

जोगिन फिरे उदास
पिया बिन जोगिन फिरे उदास!

तन पै भभूत गले में माला,
अंग अंग यौवन मतवाला,
निर्मल मन है सुन्दर मुखड़ा,
आज सुनाए अपना दुखड़ा!

मन का भेद छिपाती जाए,
आंसू पी कर गाती जाए,
मधमाती खामोश निगाहें,
सोज़ गलों में ठंडी आहें!

फूलों की बूबास है इस में,
कहने को उल्लास है इस में—

झूठा है उल्लास!
पिया बिन जोगिन फिरे उदास!

अर्श मलसियानी

मन के दर्पण से

यह चन्दा, यह झिलमिल करते चंचल तारे सारे!
सारे रूप तुम्हारे।
तुम भी सुन्दर, यह भी सुन्दर,
तुम मन मोहन प्यारे!
तुम सब एक लड़ी के मोती इक नगरी के बासी!
तुम सब दूर ही दूर से हँस कर पास बुलाने वाले,
तुम सब एक झलक दिखलाकर फिर छिप जाने वाले,
तुम सब गोरे मुखड़े वाले औ' मन सबके काले,
तुम सब मन के काले!

यह चन्दा यह झिलमिल करते बेदल तारे सारे!
सारे रूप तुम्हारे।
हम भी बेकल, यह भी बेकल,
हम दुखिया बेचारे, आंसू!

हम सब एक नयन के आँसू, एक नगर के बासी!
हम सब दुखिया रैन नगर में बातें करने वाले,
हम सब चुपके चुपके मिल कर आहें भरने वाले,
हम सब साथी प्रेम पुजारी औ' सब हैं मतवाले,
हम सब हैं मतवाले!

जावेद क़मर

पंजाब हत्याकांड

पच्छम ने पूरब के अंधे सूरज को बख्शा उज्यारा,
डगमग डगमग करती नैया को सौंपा मज़बूत किनारा!
देख समय [illegible] इक रंगे सहरंगे झंडे जोश में आए,
क्रोध कपट के खूनी तूफ़ां नींद [illegible] चौंके होश में आए!

तसबीहों औ' मालाओं की दुनियाओं में भूचाल आया,
मन्दिर से मस्जिद टकराई, मस्जिद से मन्दिर टकराया!

एकता की अर्थी को लेकर कंधों पर निकले हमसाए,
अपनों ने अपनों की लाशों से जंगल में नगर बसाए!

मन में लेकर क्रोध की अगनी, होटों पर ज़हरीली बोली,
इंसानों ने मिल कर खेली, इंसानों के खून से होली!

चीखें [illegible] औ' शरमीली धरती के होटों पर कांपी,
लालच की दौड़ों में व्याकुल पीत लताएं थर थर कांपी!

मज़हब की अँध्यारी उठी शोलों की मालाएँ ले कर,
नगरों को शमशान बनाने की मन में आशाएँ लेकर!

बर्बरता ने तोड़ के रखदी, सुन्दरता की सुन्दर थाली,
भेड़ों के सब रखवालों ने भेड़िए बन कर की रखवाली!

[illegible] लाशों की सीढ़ी से होकर ऊंचाई की गोद में पहुँचे,
[illegible] मे होने वाले मानों गहराई की गोद में पहुँचे!

अलताफ़ मशहदी

क्या उस दम साजन आएगा?

जब कली-कली गिर जाएगी, औ' फूल-फूल मुरझाएगा,
जब रूख-रूख सूना होगा, बूटा-बूटा कुम्हलाएगा,

जब पत्ता-पत्ता सूखेगा, भँवरा-भँवरा उड़ जाएगा,
क्या उस दम साजन आएगा ?
जब ठंडी-ठंडी वायू आहें भर-भर कर सो जाएगी,
जब नीली-नीली, काली-काली बदली गुम हो जाएगी,
जब रूखा-रूखा फीका-फीका समा जगत पर छाएगा,
क्या उस दम साजन आएगा ?
जब दुखिया पापी नैन मेरे, थक-थक जाएँगे रो-रो कर,
जब इक-इक दुख, इक-इक संकट छा जाएगा मेरे मन पर,
जब तड़प-तड़प औ' कलप-कलप कर दम बाहर हो जाएगा,
क्या उस दम साजन आएगा ?

अमरचंद 'कैस'

दर्शन—प्यासी

प्रियतम मुख दिखला !
मुझ से तू क्यों रूठ गया है, मेरा दोष बता !
प्रियतम मुख दिखला !
मेरी जां[1] नयनों में आई, और न अब तड़पा।
प्रियतम मुख दिखला !
मैं हूं तेरी, तेरी हूं मैं, तू मेरा हो जा
प्रियतम मुख दिखला !

अमरचंद 'कैस'

जग की झूठी प्रीत

जग की झूठी प्रीत !
फ़ानी है यह दुनिया फ़ानी, उठती मौजें, बहता पानी,
छोड़ भी इस की रामकहानी, यह है किस की [illegible] !

[1]जान।

मोह के दिन हैं दुख की रातें, ज़र[1] के फंदे, पाप की बातें !
प्रेम के रस से खाली बातें, हार यहाँ की जीत !
जग की झूठी प्रीत !

अहसान 'दानिश'

मज़दूर का बच्चा

यह प्यारा-प्यारा बच्चा, आँखों का तारा बच्चा !

यह दिल को लुभाने वाला, रो-रो के हँसाने वाला ;
फ़ितरत का दुलारा बच्चा ! यह प्यारा-प्यारा बच्चा !

आपा[2] की नज़र की रौनक़, अम्मा के घर की रौनक़,
दुखिया का सहारा बच्चा ! यह प्यारा-प्यारा बच्चा !

हूरों [illegible] तरन्नुम[3] कहिए गुलमां का तबस्सुम[4] कहिए,
जन्न[illegible] नज़ारा बच्चा ! यह प्यारा-प्यारा बच्चा !

लब पतले आँखें काली, रुख़सार[5] पै हलकी लाली,
जग रूप से न्यारा बच्चा ! यह प्यारा-प्यारा बच्चा !

मज़दूर का बेटा लेकिन, मज़दूर बनेगा इक दिन,
अफ़लास[6] का मारा बच्चा ! यह प्यारा-प्यारा बच्चा !

[illegible] का सितम[7] देखेगा, 'ना होत' का ग़म देखेगा,
[illegible] प्यारा-प्यारा बच्चा ! यह आँख का तारा बच्चा !

अहसान 'दानिश'

---

[1]धन । [2]पिता । [3]संगीत-लहरी । [4]मुसकान [5]कपोल । [6]ग़रीबी ।
[7]अन्याय ।

मन की बस्ती वीरान नहीं

मन की बस्ती वीरान नहीं।
जैसे भँवरा, उजड़े बन में,
फूलों की याद में गाता है
बन को आबाद बनाता है,
वैसे ही सखि, मेरे मन में,
पिय को मिलने की आशा है,
मन की बस्ती वीरान नहीं, मन का मंदिर सुनसान नहीं।

प्रीतम गो आप नहीं रहते,
प्रीतम की याद तो रहती है!
बस्ती आबाद तो रहती है!
मन की बस्ती वीरान नहीं, मन का मंदिर सुनसान नहीं।

रणवीर [illegible]